पाणी

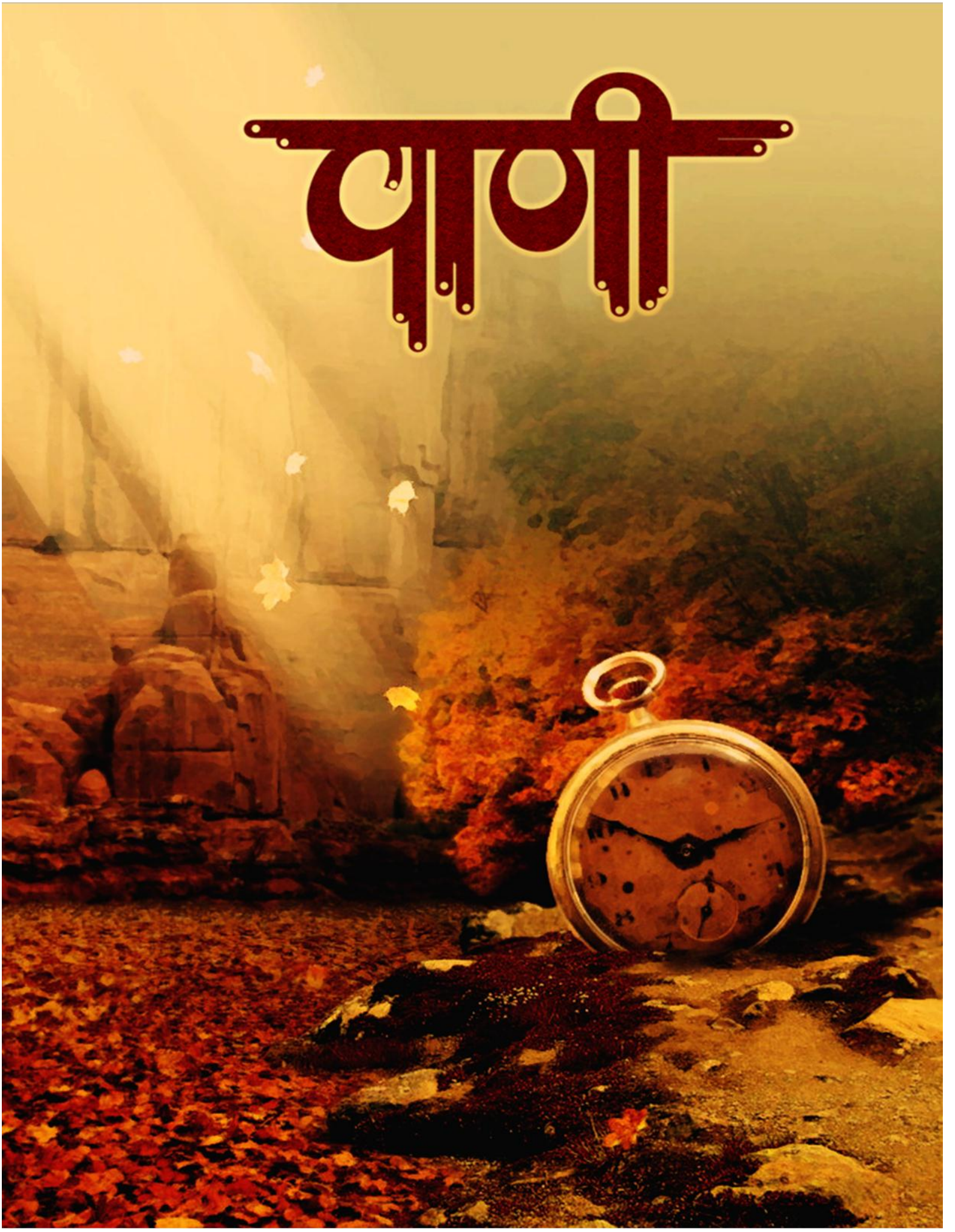

अनुक्रमणिका

बेज़ुबान की ज़ुबानी

लाख मर्ज़ की एक दवा

डायरेक्ट कनेक्ट

कार्टून

डट तो ज़रा

विज़न अपना अपना

ख़्वाब

साइंटिस्ट मत कह देना

उलटा चश्मा

जब दिन 7 बजे शुरू होता है

एक ख़्वाब हूँ मैं

पेंटिंग

दूसरी दुनिया का आदमी

मैंने कल को देखा है

मेरा माली

टाइम तो स्टार्ट-अप

आहट - बिट्स की भूतिया कहनियाँ

काश ऐसा होता

मेरी चाहत

आईना मेरा मुझसे लड़ता नहीं अब

किसी समय ऐसा भी हुआ था

होली है

बचपन से बुढ़ापा

कहते हैं इतिहास तो कोई मूर्ख भी रच सकता है परन्तु इतिहास की व्याख्या हर मनुष्य के बस की बात नहीं होती |

देश के कई हिस्सों में पिलानी का नाम भले ही आज भी अनसुना हो, पर जिसने भी पिलानी के इस सपने को करीब से जिया है वह जानता है कि किस तरह ये हमारी हर साँस, हर नब्ज़ और हर ख्याल में समा कर हमारे जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ जाता है | पढ़ाई, ओएसिस और क्लब-डिपार्टमेंट को चाहे हम अपनी पहचान माने पर इन सबसे अलग भी बिट्स में एक दुनिया है जहाँ जाति, संकाय या ओAहदे का कोई भेद नहीं है | जहाँ पप्पूजी और नागरजी महज़ व्यापारी से बढ़कर भी कुछ होते हैं | शारदा मंदिर और पटेल सर्किल में दोस्तों संग बीती उन शामों में अनायास ही मुख से स्वर फूटते हैं अहा! ज़िंदगी!

आज से एक वर्ष पूर्व जब हमने वाणी का काम शुरू किया था तब आँखों में एक ख़्वाब था | ख़्वाब था एक ऐसी पत्रिका बनाने का जिसमें गए सालों की बिट्सियन संस्कृति झलके | इतिहास के दरख़्तों से बहती उस परंपरा की छवि को पन्नों पे उतारने की चाहत थी जिसमें न सिर्फ दुनियाभर में बिट्स का परचम फहराने वाली उपलब्धियों की जयमाला हो वरन् गाँधी मार्ग से लेकर कनॉट तक बसने वाले 'बिट्सियन स्पिरिट' का प्रतिबिम्ब भी हो | लगभग तीन साल बिता लेने के बावजूद बिट्स मुझे अचंभित करने का कोई मौका नहीं छोड़ता | इस कैम्पस, हमारी ये छोटी-सी, रंग बिरंगी फिर भी किंचित् पीतवर्णी दुनिया के कई पहलु आज भी अनछुए हैं | चंद पन्नों की इस पोटली में इतिहास संजोय इन्हीं कुछ अनछुए पहलुओं की अभिव्यक्ति है वाणी |

---सिद्धांत जैन

बेज़ुबान की ज़ुबानी

– ईशान श्रीवास्तव

कई बंदिशों को तोड़कर एक सोच,
आज निकली है उड़ने आसमान में |
बेजान होकर भी मैंने महसूस सब किया,
कभी जानो ये दुनिया हमारी भी ज़ुबान में ||

मेरी घड़ियों के काँटों की धार पुरानी है,
वे घड़ियाँ ही मेरे अस्तित्व की निशानी है |
मैंने देखी हैं इन बरसों में यहाँ कई पीढियां,
मैंने देखा है सितारों को चढ़ते वो सीढियां ||
मौसम बदल गए, लोग आगे निकल गए,
मगर मैं रहा चिरायु इस बिट्सियन जहां में |
बेजान होकर भी मैंने महसूस सब किया,
कभी जानो ये दुनिया हमारी भी ज़ुबान में ||

इस श्वेत संगमरमर की चमक अमिट है,
यहाँ माँ सरस्वती का आशीर्वाद निहित है |
सुनी हैं इस परिसर में बहुत सी व्यथाएं,
मांगी हैं यहाँ लोगों ने बहुत सी दुआएं ||
मुट्ठी से रेत की तरह समय फिसलता रहा,
मगर मैं रहा चिरायु इस बिट्सियन जहां में |
बेजान होकर भी मैंने महसूस सब किया,
कभी जानो ये दुनिया हमारी भी ज़ुबान में ||

लास्ट मर्ज़ की 'एक' दवा ???

बिट्स में कदम रखते ही आपको 'बिट्सियन लाइफ' का आभास हो जाता है | पहला दिन, नई जगह, नए चेहरे, नया माहौल, हर चीज़ ही नई सी प्रतीत होती है | जैसे-जैसे दिन बीतते हैं अपनी आशाओं के विपरीत आप भी यहाँ के रंग में रम ही जाते हैं | अरे भाई ! एडमिशन प्रॉसेस के झमेले से निकले चार दिन भी नहीं हुए कि एक और मर्ज़ का सामना कीजिये - क्लब/डिपार्टमेंट में रीक्रुटमेंट का| जहाँ देखिये बस पोस्टर ही पोस्टर चिपके मिलेंगे | हर क्लब/ डिपार्टमेंट का बस अपना ही राग, अपने ही फंडे होते हैं |

जितनी भीड़ 'LTC' में नहीं उमड़ती उससे कहीं ज्यादा आपको 'स्काई' और 'टी' लॉन्स में दिखाई पड़ती है | और हो भी क्यों न भला, आखिर 'रेप्युटेशन' का जो सवाल है ! कहीं कोई चूक हो गयी या मौका हाथ से निकल गया तो सिर पर 'डोसा' का दाग जो लग जाएगा | क्लब/डिपार्टमेंट न हुआ मानो 'स्टेटस सिम्बल' ही हो गया|

" क्या आप में वो बात हैं कि आप गर्व से कह सकें कि आप घोट हैं ?!? " :P

यदि फुर्सत मिले तो एक चक्कर 'LTC' का भी काट लिया जाये | 'LTC', जी हाँ, वही जगह जहाँ टीचर क्या पढ़ा रहे हैं इसका इल्म हो न हो, लेकिन कौन सी लड़की कहाँ बैठी है इसका ध्यान ज़रूर रहता है | सभी कि नज़रें मानो यही तलाशती रहती हैं कि 'काश कोई मिल जाए' | लेकिन बिट्स में गर्लफ्रेंड बनाना हर किसी के बस की बात नहीं | ऐसा करने के लिए या तो आपका 'कूल डूड' होना ज़रूरी है या फिर अल्लाह को आप पर मेहरबान होना ज़रुरी है , और यदि आपके साथ ऐसा कुछ नहीं है तो डी.सी. तो है ही अपने पास | और कहीं आपकी जोड़ी बन जाए तो फिर क्या कहने, आप जैसा पूरे बिट्स में कोई दीवाना नहीं |

जितने चक्कर आपने LTC के नहीं लगाए उससे ज्यादा तो शिवजी व कनॉट के चक्कर काटते दिखाई पड़ते हैं और कुछ दिनों पहले जो एक सुनहरा सपना सा लगता था वो अब 'जी का जंजाल' लगता है|

"वॉय दिस कोलावरी कोलावरी 'डी' ? " :D

आपका यह सोचना कि बिट्स में सिर्फ ऐसी मानसिकता वाले छात्र ही हैं, कतई सही नहीं है | यहाँ कुछ ऐसे भी लोग हैं जिन्हें एक अलग ही ओहदा प्राप्त है - 'घोट' का, जी हाँ ! और यदि आपमें भी वो बात है तो गर्व से कहें कि "आप घोट हैं" | कई बार इन्हें दूर से भी पहचाना जा सकता है, और ऐसा हो भी क्यों ना, इनका व्यक्तित्व ही इनकी उपलब्धियों को दर्शाता है | यदि आप उन अभागों में से हैं, जिन्हें इनके दर्शन का सौभाग्य अभी तक प्राप्त नहीं हुआ तो एक बार लाईब्रेरी का रुख जरुर करें |

इन सब बातों में एक मर्ज़ की चर्चा तो रह ही गयी, सी.जी.पी.ए. की, जिसके प्रभाव से हममें से कोई भी अछूता नहीं है | चाहे आप माने या ना माने, लेकिन सेमेस्टर का अंत आते-आते सी.जी. के डर से हाथ-पैर फूलना तो लाज़मी है | जहाँ आपको बी, बी-, सी जैसे ग्रेड्स से काम चलाना पड़ता है, तो वहीं कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनके मन में अक्सर यही सवाल उठता रहता है कि 'वॉय दिस कोलावरी "डी"? ए, ए- प्राप्त करने वाले महानुभावों की चर्चा यहाँ करना बेमानी होगी|

भई, इन सारे मर्ज़ों की 'एक' दवा ढूँढ़ पाना मेरे लिए तो काफ़ी मुश्किल है; हाँ ! खुश और ज़िंदादिल रहकर शायद इनसे पार पाया जा सकता है | वैसे आप भी इन मर्ज़ों का समाधान ढूँढ़ने की कोशिश कीजिए, क्या पता आप इस प्रयास में सफल हो जाएँ ...

– पीयूष कुमार

लास्ट मर्ज़ की 'एक' दवा

ApexDC++ 1.4.3 (x86-32) - [DeZire - BITS Pilani (172.16.12.39)]
File View Transfers Window Help
डी.सी++, अपेक्स डी.सी. या स्ट्रॉंग डी.सी. : शेक्स्पीअर कह गए हैं कि आख़िर नाम में रखा ही क्या है| एक बिट्सियन की ज़िंदगी में डी.सी. की अहमियत सॉफ्टवेयर के नाम-संस्करण की मोहताज़ नहीं है | भले ही बिट्स आने से पहले डी.सी. का नाम ना सुना हो पर इस सॉफ्टवेयर के बगैर बिट्सियन जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है | 2006 में बिट्स में प्रवेश करने वाले डी.सी++ ने अपने छः वर्षीय जीवन में यूसर्स, डाउनलोडर्स और शेयर्ड डाटा के मामले में बहुत प्रगति की है | सभी तरह के बिट्सियन्स के लिए यह कोई ना कोई सौगात लेकर आया है | 'घोटों' के लिए अपार ज्ञान का भण्डार, संगीत प्रेमियों के लिए संगीत का असीम सागर और बाकियों के लिए मनोरंजन सामग्री का सस्ता एवं सुलभ साधन बन चुके डी.सी. पर "वो" सब भी भरी मात्रा में है | नई से नई फिल्म की बात हो या गुज़रे ज़माने का कोई एपिक... बहुचर्चित वीडियो हो या मनपसंद गेम, पलक झपकते ही हमारे लैपटॉप पर डाउनलोड हो जाता है... कोई नोटिस पढ़ना भूल गया हो या किसी को कुछ बेचना/खरीदना हो, गत वर्ष के प्रश्नपत्र चाहिए हों य किसी विषय पर मदद हो, डी.सी हर दम आपका साथ निभाता है |
एंड्रॉइड ट्यूटोरियल:
2007 में गूगल द्वारा लॉन्च किया गए 'एंड्रॉइड' ऑपरेटिंग सिस्टम ने गत तीन वर्षों में दुनिया के मोबाइल बाज़ार पर अपना कब्ज़ा जमा लिया | इसका पांचवा संस्करण 'जिंजर ब्रेड' और हाल ही में लॉन्च हुआ 'आइसक्रीम सैंडविच' संस्करण काफी चर्चित रहे | ओपन-सोर्स और सरल यूसर-इंटरफेस होने के कारण बिट्सियन्स इसे सीखने में काफी रूचि दिखा रहे हैं | कैम्पस में एंड्रॉइड एस.डी.ई.टी कोर्स और एंड्रॉइड मोबाइल कम्प्यूटिंग ग्रुप ने भी इसे लोकप्रिय करने में अहम भूमिका निभाई है | परिणामस्वरुप इस वर्ष भारी मात्रा में एंड्रॉइड के ट्यूटोरियल डाउन लोड किए गए |
शरलॉक सीरीज़ :
'सर ऑर्थर कोनन डॉएल' द्वारा रचित चरित्र का यह आधुनिक संस्करण हर मोड़ पर एक नया रोमांच पेश करता है | बीबीसी की इस मिनी सीरीज़ की लोकप्रियता का अंदाजा प्रत्येक एपिसोड के लिए बिट्सियन्स की अदभुत उत्सुकता देखके ही लगाया जा सकता है | आधुनिक शरलॉक को परदे पर उतारने वाले 'बेनेडिक्ट कम्बरबैच' के सटीक अभिनय से यह सीरीज़ दर्शकों के दिलो-दिमाग पर छा गयी| आई.एम.डी.बी. रेटिंग 9.1 वाली इस टीवी सीरीज के छः एपिसोड डी.सी पर काफी डाउनलोड किए गए |
[20:40:35] डी.सी के टॉप डाउनलोडस
रियालिटी शो: बिग बॉस, रोडीज़, कॉमेडी सर्कस, डी आई डी, मास्टरशेफ़
सीरीज़: फ्रेंड्स, बी. बी. टी., हाउस, डेक्स्टर, प्रिसन ब्रेक
वीडियो: WWE, शीला की जवानी, मैच ऑफ द डे, कोलावेरी डी., ऐपिक रेप बैटल
गेम्स: फीफा 12, काउंटर स्ट्राइक, एन. एफ. एस., असैसीन्स् क्रीड, COD MW
PSYCHEDELIA - Re... | Harami Afghani | cOmiEnzO InCePtIoN | ^^ThaDi-MaXx^^ (... | n0w0nd3r HUB -
[20:40:38] Connectivity: UPnP: Successfully created port mappings
DHT: - S

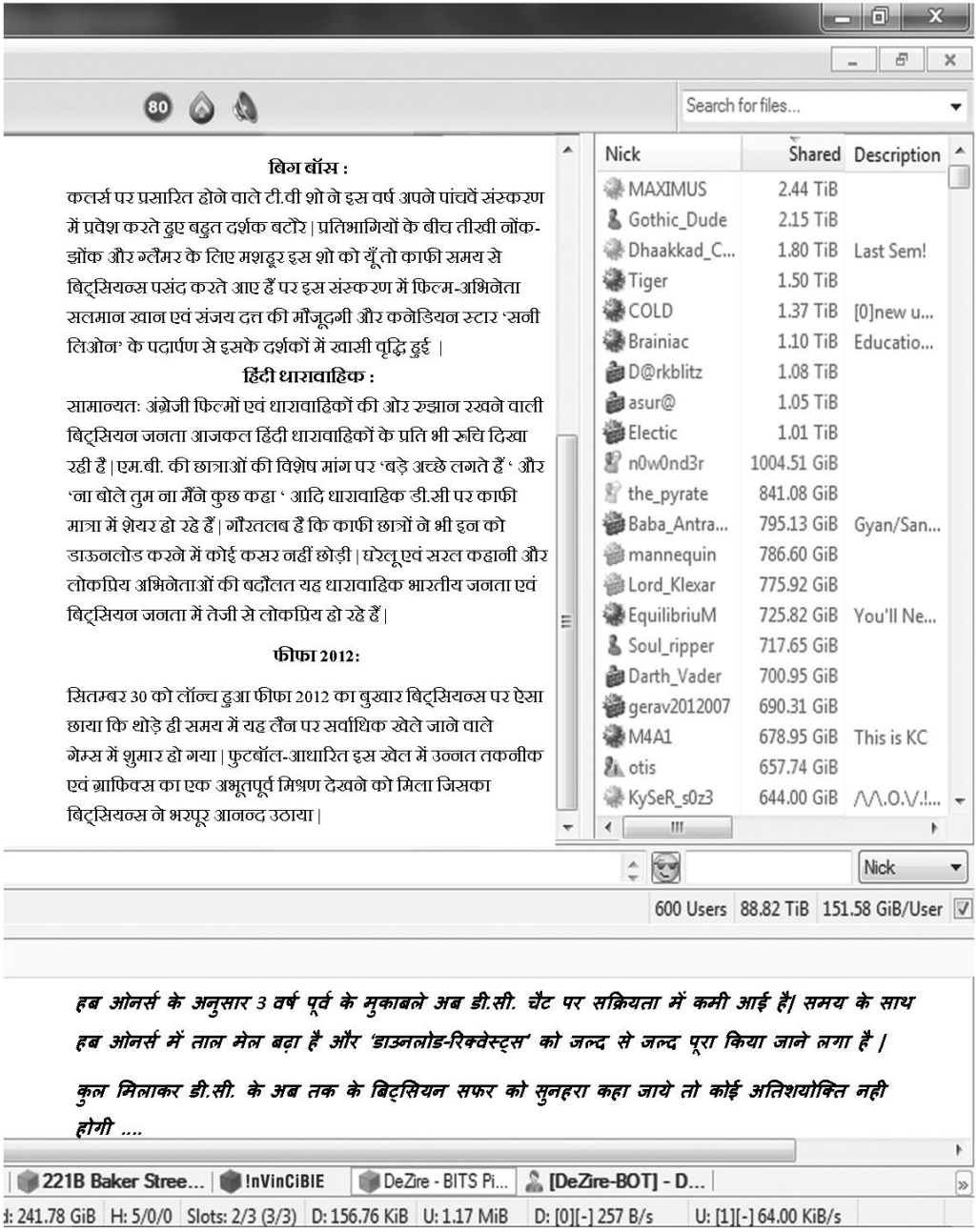
Search for files...
बिग बॉस :
कलर्स पर प्रसारित होने वाले टी.वी शो ने इस वर्ष अपने पांचवें संस्करण में प्रवेश करते हुए बहुत दर्शक बटोरे | प्रतिभागियों के बीच तीखी नोंक-झोंक और ग्लैमर के लिए मशहूर इस शो को यूँ तो काफी समय से बिट्सियन्स पसंद करते आए हैं पर इस संस्करण में फिल्म-अभिनेता सलमान खान एवं संजय दत्त की मौजूदगी और कनेडियन स्टार 'सनी लिओन' के पदार्पण से इसके दर्शकों में खासी वृद्धि हुई |
हिंदी धारावाहिक :
सामान्यतः अंग्रेजी फिल्मों एवं धारावाहिकों की ओर रुझान रखने वाली बिट्सियन जनता आजकल हिंदी धारावाहिकों के प्रति भी रूचि दिखा रही है | एम.बी. की छात्राओं की विशेष मांग पर 'बड़े अच्छे लगते हैं ' और 'ना बोले तुम ना मैंने कुछ कहा ' आदि धारावाहिक डी.सी पर काफी मात्रा में शेयर हो रहे हैं | गौरतलब है कि काफी छात्रों ने भी इन को डाऊनलोड करने में कोई कसर नहीं छोड़ी | घरेलू एवं सरल कहानी और लोकप्रिय अभिनेताओं की बदौलत यह धारावाहिक भारतीय जनता एवं बिट्सियन जनता में तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं |
फीफा 2012:
सितम्बर 30 को लॉन्च हुआ फीफा 2012 का बुखार बिट्सियन्स पर ऐसा छाया कि थोड़े ही समय में यह गैन पर सर्वाधिक खेले जाने वाले गेम्स में शुमार हो गया | फुटबॉल-आधारित इस खेल में उन्नत तकनीक एवं ग्राफिक्स का एक अभूतपूर्व मिश्रण देखने को मिला जिसका बिट्सियन्स ने भरपूर आनन्द उठाया |
Nick | Shared | Description
MAXIMUS 2.44 TiB
Gothic_Dude 2.15 TiB
Dhaakkad_C... 1.80 TiB Last Sem!
Tiger 1.50 TiB
COLD 1.37 TiB [0]new u...
Brainiac 1.10 TiB Educatio...
D@rkblitz 1.08 TiB
asur@ 1.05 TiB
Electic 1.01 TiB
n0w0nd3r 1004.51 GiB
the_pyrate 841.08 GiB
Baba_Antra... 795.13 GiB Gyan/San...
mannequin 786.60 GiB
Lord_Klexar 775.92 GiB
EquilibriuM 725.82 GiB You'll Ne...
Soul_ripper 717.65 GiB
Darth_Vader 700.95 GiB
gerav2012007 690.31 GiB
M4A1 678.95 GiB This is KC
otis 657.74 GiB
KySeR_s0z3 644.00 GiB /\/\.O.\/.!...
Nick
600 Users 88.82 TiB 151.58 GiB/User
हब ओनर्स के अनुसार 3 वर्ष पूर्व के मुकाबले अब डी.सी. चैट पर सक्रियता में कमी आई है| समय के साथ हब ओनर्स में ताल मेल बढ़ा है और 'डाउनलोड-रिक्वेस्ट्स' को जल्द से जल्द पूरा किया जाने लगा है |
कुल मिलाकर डी.सी. के अब तक के बिट्सियन सफर को सुनहरा कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी ....
221B Baker Stree... | !nVinCiBIE | DeZire - BITS Pi... | [DeZire-BOT] - D...
I: 241.78 GiB H: 5/0/0 Slots: 2/3 (3/3) D: 156.76 KiB U: 1.17 MiB D: [0][-] 257 B/s U: [1][-] 64.00 KiB/s

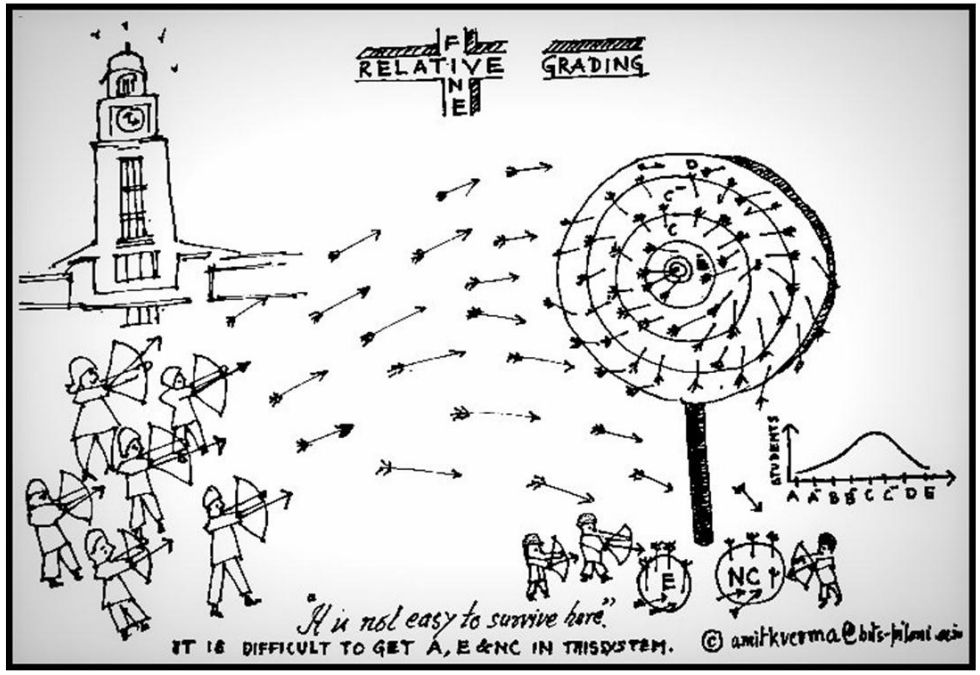

डट तो ज़रा

– डॉ पुष्पलता
विभागाध्यक्षा, भाषा विभाग, बिट्स पिलानी

ऐ दोस्त !
राह पर चल कर देख तो सही,
काँटों की चुभन का एहसास इतना गहरा है
फूलों की महक का भान नहीं,
रुकावटों के बाद ही मिलती है मंज़िल
क्या पहुंचेगा मंज़िल पर जो बीच रास्ते में घबरा गया,
समझ ओ नासमझ !
हटना आसान है,
डटना मुश्किल
मुश्किलों पर अपनी,मुस्कुराकर तो देख
कदम से कदम बढ़ाकर तो देख
रास्ते पर अपने आप ही सहारा मिल जायेगा
बादल हटेगा, अँधेरा छटेगा
हर मुश्किल होगी आसान
सोच कर सोच ऐ दोस्त!
मन पर पायी जो विजय
फिर तू होगा और तेरी मंज़िल
डट तो ज़रा, बादल हटने को है |
अगले ही मोड़ पर खड़ी है कामयाबी तेरी
बेकल है चूमने को कदम तेरे|

विज़न अपना-अपना

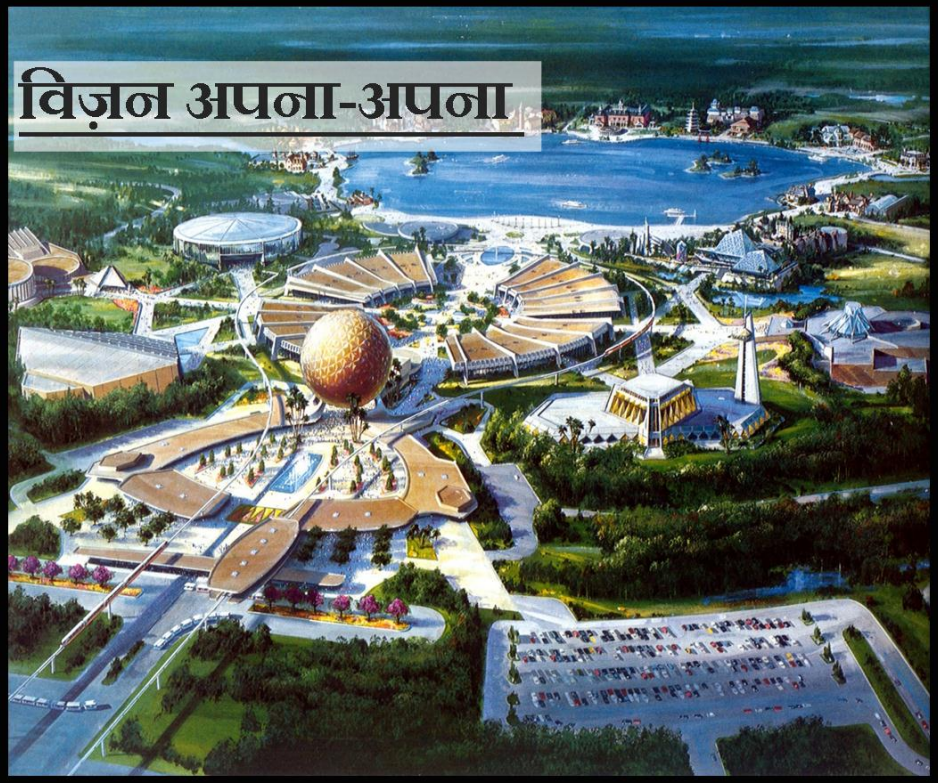

यदि हमसे किसी विषय से सम्बंधित सुधारात्मक परिवर्तनों के विषय में पूछा जाए तो हम ऐसे सभी संभव और असंभव बदलावों के बारे में सोचने लगते हैं जिनके सहारे उन परिवर्तनों को आदर्श बनाया जा सके | ऐसा ही कुछ यदि बिट्स के विज़न 2020 के लिए हो तो? विज़न 2020 बिट्स को एक ऐसे कॉलेज के रूप में देखता है जो भारत का ही नहीं बल्कि विश्व का सर्वोत्तम इंजीनियरिंग संस्थान है | हालाँकि यह अभी दूर की बात है पर यदि ऐसा हो जाये तो हम विश्व के सर्वोत्तम इंजीनियरिंग संस्थान के "अलुम्नी" बन जायेंगे|

बिट्स का ये कैम्पस हमें चाहे जितना भी खटारा लगे लेकिन ये हमें बेहद प्यारा है और बिट्स में 'परिवर्तन' के जो सब्ज-बाग हमें दिखाए गए हैं उनसे आने वाले समय में एक अद्भुत एवं खूबसूरत कैम्पस की छवि अनायास ही मन में कौंध जाती है | और अब ऐसे माहौल में यदि कोई नादान बिट्सियन मुंगेरीलालमयी स्वप्न भी

> “ मेस में खाने को बेहतर करने के साथ-साथ प्रोजेक्ट विजन 2020 के अंतर्गत बनने वाले फूड कॉम्प्लेक्स में मेक्डोनाल्ड, पिज्जाहट और डामिनोज तो होने ही चाहिए | ”

देखने लगे तो निश्चित ही उसे क्षमा किया जा सकता है | चलिए अब सुधारों की बात करते हैं | सबसे पहले तो पिलानी आते समय होने वाली दिक्कतों को ख़त्म करना होगा | इसलिए पिलानी में एक रेलवे स्टेशन एवं दिल्ली तक की सड़क का ठीक होना बहुत जरूरी है | साथ ही यदि विश्व के सर्वोत्तम इंजीनियरिंग संस्थान पहुँचने के लिए एयरपोर्ट से 10 मिनट से ज्यादा देर का रास्ता न हो तो क्या बात हो? मतलब सीधा है कि पिलानी में एअरपोर्ट हो; भले ही फ्लाइट्स केवल छुट्टियों के समय ही उपलब्ध हो | वैसे कैम्पस में प्रवेश करते समय "मुख्य प्रवेश द्वार" और बाहर से बहुत ही छोटे कमरे जैसा दिखने वाला 'स्वीमिंग पूल' देखकर आगंतुकों के मन में बिट्स के प्रति कुछ नकारात्मक सी छवि बनती है, अतः इन दोनों को कुछ बड़ा और आकर्षक बनाया जाए |

चूँकि विद्यार्थी और अध्यापक किसी भी शिक्षण संस्थान के प्रमुख अंग होते हैं इसलिए "छात्रावास" और "फैकल्टी क्वार्टर्स" में कई सुधारों की नितांत आवश्यकता है, जैसे कि सभी दीवारों को पेंट करने में चूने की जगह प्लास्टिक पेंट या डिस्टेम्पर का प्रयोग किया जाए | सभी छात्रावासों के कॉमन रूम का फर्श "व्यास" के कॉमन रूम जैसा हो और टी.वी. वाले कॉमन रूम में कुर्सियों की जगह सोफे हों | बंजर जमीन जैसे दिखने वाले जिम-जी और छात्रावासों के प्रांगण में हरी घास नजर आती रहे तो हरियाली देखकर ही मन खुश हो जाए|

आई.आई.टी और अन्य ठीक-ठाक इंजीनियरिंग कॉलेजों (और यहाँ तक कि बी.के.बी.आई.ई.टी. भी!) से बिट्स जिस मामले में कहीं पीछे है वो है कैम्पस में वाई.फाई. न होना | आशय स्पष्ट है की नंबर वन कॉलेज बनने के लिए वाई.फाई. कनेक्टिविटी जरूरी है| इसके अतिरिक्त यहाँ की भीषण गर्मी और सर्दी से बचने के लिए सभी एफ़.डी., एल.टी.सी. और छात्रावासों में 'ताप नियंत्रक निकाय' का होना "विज़न अपना-अपना" के प्रमुख मुद्दों में से है | अब बात करते हैं 'भोजन' की | मेस में खाने को बेहतर करने के साथ-साथ प्रोजेक्ट परिवर्तन के अंतर्गत बनने वाले फूड कॉम्प्लेक्स में मेक्डोनाल्ड, पिज़्ज़ा-हट और डामिनोज तो होने ही चाहिए | कमरों में मौजूद दशकों पुराने लोहे के दरवाजों को लकड़ी या प्लास्टिक के दरवाजों से बदल दिया जाए | राणाप्रताप व अन्य कुछ भवनों में दिखने वाली कपड़े या प्लास्टिक की रंग-बिरंगी जालियां बड़े-बड़े छेद होने की वजह से मछरों को भले ही न रोक पाएँ पर ये अद्भुत वर्ण-मिश्रण मन में बिट्स की नकारात्मक छवि निश्चित ही बनाती है | ये सब तो छोटे किन्तु तुरंत किए जाने वाले परिवर्तनों में से हैं|

अब कुछ बड़े परिवर्तनों की बात करते हैं क्योंकि बिट्स में 'छोटी सोच' अपराध से कम थोड़े ही है | कैसा हो अगर 'ओपेन एयर एम्फीथिएटर' के साथ-साथ एक विशाल और अत्याधुनिक ऑडिटोरियम भी बन जाए | इन सब के साथ मेडिकल इमरजेंसी में दिल्ली के किसी बड़े अस्पताल जाने के लिए कैम्पस में एक 'हेलीकाप्टर' हो तो कम से कम भारत में तो बिट्स इस तरह की सुविधा युक्त पहला शैक्षणिक संस्थान बन जाएगा | एक बड़ी उपलब्धि होगी अगर वर्ष 2020 में सिविल इंजीनियरिंग के विद्यार्थी अपना भविष्य सुरक्षित समझें, हालांकि प्लेसमेंट यूनिट को इसके लिए तगड़ी मशक्कत करनी होगी |

अब कुछ ऐसा हो जो सिर्फ विश्व के सर्वश्रेष्ठ कॉलेज से अपेक्षित है - "मिनी मेट्रो" | अरे भई ! घबराईए नहीं, सपना देखना तो हर किसी का जन्मसिद्ध अधिकार है | कैम्पस के अन्दर किसी भी जगह आने-जाने के लिए "नो साइकिल, नो ऑटो एंड नो कार, सिर्फ मिनी मेट्रो" | हो सकता है कि इसमें दिल्ली मेट्रो के 6 डिब्बों की जगह एक ही डिब्बे से काम चल जाए और ये मिनी मेट्रो तंत्र 4 लाइन्स में विभाजित हो :-

रेड लाइन स्टेशंस - मीरा भवन ------- सैक ------- स्काई ------- ऑडिटोरियम ------- एफ.डी.1 ------ लाईब्रेरी

यैलो लाइन स्टेशंस - कनॉट ------- अक्षय ------- व्यास ------- सरदार पटेल सर्किल ------- एफ.डी.2

ब्लू लाइन स्टेशंस - मेन गेट ------ वी फास्ट ------ अशोक ------ राणा प्रताप ------ वर्कशॉप

ग्रीन लाइन - अशोक सर्किल ------- एंक सर्किल ------- पटेल सर्किल ------- गाँधी सर्किल

जिसमें ऑडिटोरियम एक भूमिगत स्टेशन होगा | गाँधी सर्किल रेड लाइन और ग्रीन लाइन का जंक्शन होगा, और साथ ही वर्कशॉप रेड व ब्लू लाइन का जंक्शन होगा | फैकल्टी मेम्बर्स के लिए भी इन मार्गों का विस्तार किया जा सके जिससे पेट्रोल की बचत के साथ-साथ अध्यापकों व विद्यार्थियों को 'मिनी मेट्रो' के अन्दर संपर्क व किसी विषय पर दुविधा दूर करने का समय मिल सके | सच!! कैसा होगा वह अद्भुत बिट्स !

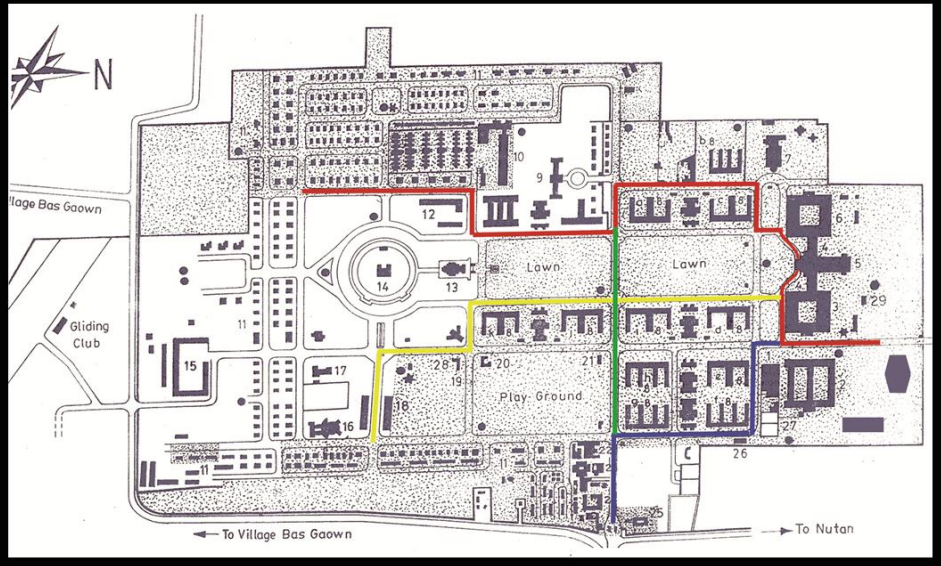

किसी भी अच्छे शिक्षण संस्थान की नींव अच्छे विद्यार्थियों से ही बनती है | अतः आने वाले कल में संरचनात्मक उत्थान के साथ-साथ 'फीस' नियंत्रित रहे जिससे कि मध्यम वर्गीय परिवारों के मेधावी विद्यार्थी भी बिट्स का फॉर्म भरने में संकोच न करें | उदहारण के तौर पर वर्ष 2011 BITSAT में क्रमशः 400 ,350 व 300 से अधिक अंक पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या वर्ष 2010 BITSAT के मुकाबले काफी अधिक थी पर फिर भी लगभग हर संकाय का कट-ऑफ वर्ष 2010 से कम रहा | शायद फीस में वृद्धि इसका एक प्रमुख कारण रही|

'व्यास' के छात्रों को भले ही 'पुल' पार कर मेस जाना पड़ता हो और अब भले ही उनके 'एंक' जाने में भी पुल की वजह से पिछले सेमेस्टर के मुकाबले 90% तक गिरावट आई हो ... फिर भी हम बिट्सियन्स के लिए ये कोई बड़ी बात नहीं है |

चलिए बिना दुखी हुए, सपनों को छोड़कर धरातल पर लौटते हैं | आप निराश न हों क्योंकि सच में बहुत कुछ बदलने वाला है और आप को तो बहुत खुश होना चाहिए क्योंकि आप पुराने और नए बिट्स, दोनों को देखने और महसूस करने वाले हैं जिसकी शुरुआत 'सी लॉन्स' की खुदाई से हो चुकी है| हालाँकि इस अवधि में हमें कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है परन्तु इनसे परेशान होने की बात नहीं है | हाँ, 'व्यास' के छात्रों को भले ही 'पुल' पार कर मेस जाना पड़ता हो और अब भले ही उनके 'एंक' जाने में भी पुल की वजह से पिछले सेमेस्टर के मुकाबले 90% तक गिरावट आई हो; पूरे कैम्पस में अस्थमा व दमा के रोगिओं की परेशानी बढ़ी हो ; चाहे कृष्ण भवन से राम भवन जाने के लिए ऑडिटोरियम से घूमकर जाना पड़ता हो, फिर भी हम बिट्सियन्स के लिए ये कोई बड़ी बात नहीं है | इसके अतिरिक्त कुछ ईवेंट्स के लिए उचित जगह नहीं मिल रही है जैसे कि 'इंटरफेस' | 'जिम-जी' भी दो भागों में विभाजित हो गया है, पर फिर आने वाले अच्छे कल के लिए यदि हम अपना बचपन बर्बाद कर सकते हैं, एक्जाम से पहले पूरी रात पढ़ सकते हैं तो फिर ये सब तो कुछ भी नहीं है | जब भी आपका मन उदास हो तो एक बार पूर्ण विश्वास के साथ याद कर लीजिए कि ये सब इसलिए है क्योंकि हम सब 'भविष्य के सर्वश्रेष्ठ इंजीनियरिंग कॉलेज के अलुम्नाई' बनाने वाले हैं |

— अनिरुद्ध मिश्रा

ख़्वाब...

– सौरभ बियानी

"क्या - क्या सपने देखा करता था बचपन में, और आज जब कुछ सपने पूरे होने के कगार पर हैं तो कितना अच्छा लगता है |" यही सब सोचता हुआ मैं रास्ते से गुजर रहा था |

अचानक एक दबी हुई सी आवाज सुनाई दी, मुड़कर देखा तो एक मासूम सा बच्चा खड़ा था | उसने मैले से फटे हुए कपडे पहने थे और उसके बाल बिखरे हुए थे |

तभी याद आया कि इसे कहीं देखा है, "अरे, हाँ ये तो चाय वाले के यहाँ काम करता है" |

मैंने पूछा , "क्या हुआ छोटू, बड़े उदास लग रहे हो? "

" भैया, बहुत भूख लगी है, कुछ खाने को दे दो न ".

"क्यों आज चाचा ने खाना नहीं दिया क्या ? "

उसने मुँह लटकाते हुए कहा, "नहीं, वे भला मुझे क्यों खाना देंगे अब, काम से निकाल दिया है उन्होंने मुझे" |

मुझे यह सुनकर काफी बुरा लगा, मैंने उसे तुरंत बैग से कुछ बिस्किट निकाल कर दे दिए |

बिस्किट देते हुए मैंने पूछा, "घर में कौन - कौन हैं तुम्हारे?...वे लोग खाना नहीं देते क्या ?"

"भैया, माँ को गुजरे तो दो साल हो गए, पिताजी हैं और एक छोटा भाई...पिताजी मजदूरी करते हैं और सारी कमाई शराब में उड़ा देते हैं...जब घर आते हैं तो बहुत बुरा भला कहते हैं और पीटते भी हैं " | ऐसा कहते हुए वो अपने चेहरे पर चोट के कुछ निशान दिखाने लगा जो उसके पिता की निर्दयता को भली-भाँति दर्शा रहे थे |

मैंने उससे पुछा, "स्कूल तो जाते हो न तुम ?"

इस पर वो बिलकुल चुप हो गया और मुझे घूरने लगा |

मैंने तुरंत बात बदलते हुए कहा, "अच्छा यह बताओ, बड़े होकर क्या बनोगे ?"

वह कुछ सोचने लगा | मुझे तो लगा कि शायद मैंने फिर कुछ गलत पूछ लिया है, इसने तो कभी ऐसा सोचा ही नहीं होगा |

तभी वो पूरे जोश के साथ कहने लगा, "मैं तो बड़ा होकर डॉक्टर ही बनूंगा " |

"और, न बन सके तो" ,मैंने कहा |

उसने आसमान की और देखते हुए कहा, "तो फिर मैं कोई बड़ा इंजीनियर बन जाऊँगा" |

इतना कहते ही वो एक कटी पतंग के पीछे दौड़ पड़ा |

मैं देख रहा था उसे दौड़ते हुए उस पतंग के पीछे, उस कटी पतंग को तो शायद उसने पकड़ भी लिया होगा, मगर उसके ख़्वाबों की पतंग...वह तो उसके पास शायद कभी ना आएगी.....जाती रहेगी बस दूर ही दूर .....अभी नज़र तो आ रही है.....एक दिन यों खो जायेगी मानो उसका कभी अस्तित्व ही ना रहा हो.....

साइंटिस्ट मत कह देना

– गौतम सिंघवी

डिपार्टमेंट ऑफ़ फार्मेसी

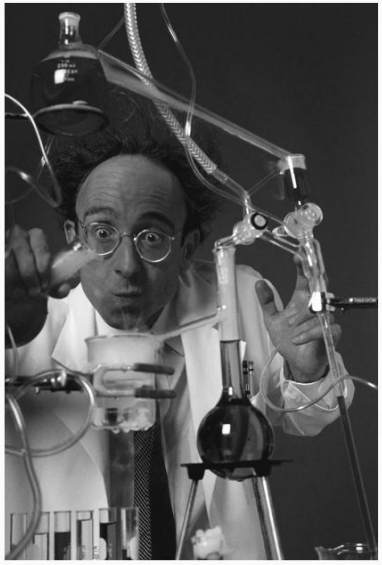

एक दिन किसी ने हमसे कहा -

आप तो आइन्स्टीन की तरह दिखते हो!

बस उस दिन से हम अपनी,

अच्छी ख़ासी ज़िन्दगी को लेबोरेट्री बना बैठे!

बिना प्रयोगों के प्रयोगशाला चलने लगी,

हर विचार में एक नयी खोज होने लगी!

ऊर्जा तो क्या हमने बल को भी नहीं छोड़ा,

हर समीकरण को एक कान्स्टन्ट तक मोड़ा!

जीवन का हर पहलू हमें संदेहास्पद लगने लगा,

इंसान, इंसान है इस पर भी शक होने लगा !

हमारी हर एक खोज से सैकड़ों नोट बुक तैयार हो गयी,

कुछ ही दिनों में 7-8 किलो रद्दी जमा हो गयी !

जो लिखा था उसको वापस हम ही नहीं पढ़ पाए,

अपनी लिखावट को हम ही समझ नहीं पाए!

दो माह में ही हमारी ज़िन्दगी बेहाल हो गयी,

मध्यम श्रेणी से BPL में तब्दील हो गयी!

भैया, किसी को व्यर्थ में ही चढ़ा मत देना,

और कुछ नहीं तो,कम से कम साइंटिस्ट मत बना देना!

उल्टा चश्मा

जाने अनजाने हम सभी ने कभी न कभी तो यह सोचा ही है कि मान लो यदि दुनिया की हर चीज़ में जान होती तो ? यदि हमारे आसपास की हर चीज़ अपनी भावनाएँ व्यक्त कर पाती तो क्या होता| हमने पराग कंसारा के चुटकुलों और माईम क्लब की प्रस्तुतियों में तो इसका अनुभव किया ही है पर फिर भी ये चंचल मन सदैव थोड़ा और जानने व सोचने के लिए बेताब रहता है | तो आइए हम भी आपको कल्पना की ऐसी ही एक उड़ान पर ले चलें . . .

चश्मा मेरे दो मजबूत हाथों और फोल्डेबल पैरों से मैं मानव जाती के सर पर बैठा रहता हूँ | वैसे तो मेरी बिरादरी सभी प्रकार के मानवों के प्रयोग में आती है ,लेकिन घोटों के सिरपर मैं ज्यादा बैठता हूँ | कभी खाँसी आने पर जैसे ही मेरी पकड़ छूटती है तो अच्छे-अच्छों को मेरी खैरियत पूछनी पड़ती है | मेरा काम बड़ा निराला है | मेले के अड्डन्नीछापों से लेकर आइंस्टीन तक कि आँखों में मैं झाँक चुका हूँ, इसलिए बड़ा ज्ञानवान हूँ | मेरे साहस के बिना ना तो फेल्प्स ओलंपिक में गोल्ड जीत पाता, और ना ही बिट्सियन वर्कशॉप में वेल्डिंग कर पाते| मेरे कुछ मवाली "सनग्लासेस" नामक दोस्तों को आग से खेलने का बड़ा शौक है | वो कभी टॉप पर (सिर पर), कभी टॉप के नीचे (आँखों पर), और कभी-कभी टॉप के अंदर(???) होते हैं | मेरा रंग सारी दुनिया का रंग निर्धारित करता है | मैं चाहूँ तो धुप को छाया, लाल को पीला, तो हर रंगीन इंसान को हल्का भूरा बना सकता हूँ, जैसा कि "बादशाह शाहरुख खान" किया करते थे| अब क्या बताऊँ , मेरी शरण में आने वाली अंधी, काणी आँखों को मैंने पलके उठा कर जीना सिखाया है | मेरे शरणार्थियों में बॉलीवुड, हॉलीवुड जैसे कुछ बड़े नाम तो हैं ही, अब आप सोचे कि क्या अगला नाम आप बनना चाहेंगे?"

|| ऐनकम् शरणं गच्छामि ||

बिट्सियन कुर्सी की प्रेम कहानी

आ घोट बैठ ! फिर से हीट जेनरेट कर, टेबल पर भी और मुझ पर भी | वैसे ये टेबल भी बड़ी शातिर है, कभी मेरे साथ रहती है तो कभी उस सौतन "ईज़ी चेयर" के साथ | वर्कशॉप के कारपेंट्री डिपार्टमेंट में अपना पंजीकरण करवाकर जब पहली बार हमारी स्लिप मिली जिस पर एस.के.262 लिखा था तो मेरे नटबोल्ट ढीले हो गए और टेबल का ड्रावर नामक दिल 100 की आवृत्ति से अंदर बाहर होने लगा | जैसे ही ठेले में उनकी बारात और मेरी डोली कमरे पर पहुँची तो वो "ईजीचेयर" धूल का मेकअप किये पहले ही बैठी थी|

पर धन्य है वह बिट्सियन जिसने उस गन्दी सी चेयर को हटा मुझे वहाँ बैठा दिया | मैंने वहाँ बैठे पिताजी पलंग को प्रणाम किया ,और फिर अपनी गृहस्थी के सामान टेबल जी के कंधों पर जमा दिए| अब मेरे बिट्सियन साथियों से एक ही प्रार्थना है कि कृपया क्विज़ में मार्क्स लाने जैसे तुच्छ कार्यों के लिए रात भर रोशनी करके हमारे सुखी परिवार को परेशान ना करें और जब भी छुट्टियों में घर जाए तो मुझे मेरे प्रिय टेबल के साथ बैठा जाएँ ताकि हम भी आराम से छुट्टियाँ मना सके |

शानभरा क्लॉकटावर

मेरा गुडमॉर्निंग उबासी लेते छात्र और तनकर चलने वाली फैकल्टी के साथ और गुडनाईट हूटिंग, उल्लास तथा जोश से भरी मस्त बिट्सियन रातों के साथ होता है | मेरे हाथ सालों से समय के साथ सिंक्रोनाइज होकर बिट्स का इतिहास लिखते आ रहे हैं|

देखिये आज वह मेरा साथी टेम्पल 3 महीनों के बाद नहा रहा है | हमारा ये याराना कायम रखने के लिए हफीज कांट्रेक्टर को भी ज़मीन के 40 फीट नीचे जाना पड़ा | मेरे अगल-बगल के घोट साथी जिन्हें लोग एफ.डी. के नाम से जानते हैं मुझे बोर करते रहते हैं लेकिन मज़े की बात तो यह है कि स्पेशल लेक्चर्स, कोन्वोकेशन, इनॉग और नाईट्स मेरे ही हाथ के नीचे होती हैं | इसीलिए कहता हूँ दोस्तों कि घोटने में नहीं बल्कि जीवन के सारे मजे चखने में ही सफलता है |

अब मेरी शान की कहानियाँ क्या सुनाऊं, आज ही दूत कबूतर को टेम्पल से बुलवाया है, स्टेच्यु ऑफ लिबर्टी तक अपनी खैरियत का पैगाम पंहुचाया है | और हाँ, जब एक बार मुझे नहाना था तो मैंने दूत कबूतर से मेघराज को बुलावा भेजा | मेघराज आए और मुझे नहलाकर चले गए और लोग कहते ही राह गए "इस बार बॉसम में बारिश ज्यादा हुई है" |

जब दिन सुबह 7 बजे शुरू होता है

— सहर्ष चोरड़िया (2007A2PS496P)

ऑफिस का पहला दिन; वक्त सुबह के 7 बजे; अपने आप को इतनी जल्दी उठा हुआ और खास तौर पर नहाया हुआ पाकर वाकई खुशी हो रही है ! काला सूट, लाल टाई पहने एक गोरे चिट्टे नाटे से व्यक्ति ने बड़े ही नजाकत भरे लहज़े में अत्यंत भारी भरकम अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग करते हुए हमारे स्वागत-सत्र का उल्लेख किया | सभी नवागंतुको को एक बारगी डराने की उनकी यह कोशिश पूर्ण रूप से साकार रही | तत्पश्चात जैसा कि दुनिया का दस्तूर है, सभी से अपना परिचय देने को कहा गया, इस झूठी उम्मीद में कि या तो उन्हें या हमें एक ही बार में सारे नाम याद हो जायेंगे | एक औपचारिक परिचय सत्र की लड़ी सी लग गयी; वही एक नाम और फिर एक अनसुना सा कॉलेज; बीच में एक आवाज़ आई - "आय एम फ्रॉम बिट्स पिलानी" | सभी नज़रें आश्चर्य में घूमी और कंपनी के मैनेजमेंट कि आँखों में एक चमक दिखी | वही चमक जो चार साल पहले अपने अभिभावकों की आँखों में मैंने देखी थी | आज के दिन यह महसूस हुआ कि ये नाम चार सालों में किस तरह घर की मुर्गी बन कर रह गया था | आज वक्त था गौरवान्वित महसूस करने का | अपना सीना चौड़ा कर औरों से आगे बढ़कर हाथ मिलाने का |

संयोगवश मेरी नौकरी एक ऐसी कंपनी में लगी जहां मैं पहला बिट्सियन छात्र हूँ | यहाँ पल-पल मुझे ये एहसास होता है कि पिछले चार सालों में हमने जिंदगी भर के लिए एक अमूल्य पूँजी अर्जित की है | हम वाकई इस देश के चंद सर्वोच्च दिमागों में से एक को साथ लिए घूम रहे हैं | मगर साथ ही नज़रें हर टी-शर्ट में एक क्लॉक-टॉवर ढूँढने का भरसक प्रयास करती रहीं, हलक हर लव्ज़ में "ऑब", "जेन" जैसे शब्द प्रयोग करने का मौका तलाशता रहा और मस्तिष्क हर चेहरे में एक पहचाने हुए चेहरे का अक्स ढूँढने की साजिश रचता रहा | मगर सभी का परिणाम बस एक - "लाईट!" बिट्सियन दोस्तों के एस.एम.एस आते रहे जिनमें अधिकतर में जिक्र था बंगलोर के फलाँ शॉपिंग मॉल में अनायास ही किसी बिट्सियन से मिल लेने का, या कंपनी में चयनित साथी बिट्सियन दोस्तों के साथ मिल के मस्ती करने का, या फिर "यह मेरा नया नंबर है" | तब मुझे एहसास हुआ कि भीड़ में तन्हा सिर्फ 'senti' होने पर ही नहीं लगता (उँगलियों ने स्वतः इस वाक्य के आगे एक :P जोड़ दिया था!) |

ख़ैर, टेबल के नीचे से एस.एम.एस. के आदान प्रदान का दौर जारी था और उंगलियां मशीनों की भाँती कीपैड (हाँ मैंने अब तक टच स्क्रीन नहीं खरीदा था!) पर दौड़े जा रही थीं | बीच-बीच में इस दौर पे विराम लग रहा था क्योंकि सामने चल रहे लेक्चर के शुरू होते ही मैं अर्धसुप्त अवस्था में आ चुका था और कंपनी की तथाकथित बड़ी-बड़ी हस्तियाँ इस अर्ध को पूर्ण करने की ठान चुकी थीं | जैसे ही गर्दन में झटका आता या कुर्सी से हाथ फिसलता, आँखें खुल कर बड़ी हो जातीं और आस पास देख कर यह तसल्ली कर लेतीं कि किसी ने देखा तो नहीं! फिर दूसरी बार पूरे हॉल में नज़रें घुमा के यह जायज़ा लिया जाता कि अपने जैसे कितने लोग इस गुण के धनी हैं |

और फिर याद आती है 0% अटेंडेंस ! भवन से निकलने के पहले "लाईट, इतने लेट तो यहीं हो गए, अब जाने का क्या मतलब", अगर भवन से निकल गए तो "लाईट, कौनसा वो प्रोफ जो पढाते हैं वो मुझे समझ आता है, इससे तो रेहड़ी चलते हैं" और अगर फिर भी हिम्मत कर के एफ.डी. तक पहुँच गए तो एक न एक अवतार विंगी या क्लब/डिपार्टमेंट के दोस्त के रूप में सीढ़ियों से उतरता है और कहता है "क्लास लाईट ले, आई.सी. चलते हैं!"

दिमाग इसी ऊहापोह में लगा रहा और पहला दिन शांति पूर्वक (!) समाप्त हुआ | आश्चर्य इस बात का कि बिना

आई.सी. या स्काई गए भी शाम के 5 बज सकते हैं! और एक गौरव की बात, शायद पूरे चार साल बाद मैंने सुबह 8 से शाम 5 बजे तक सारे लेक्चर सुने!

शाम को कंपनी प्रदत्त गेस्ट हाउस के मेस में छप्पन भोग से सुसज्जित भोजन ग्रहण करने के बावजूद उदर में अब तक हलचल मच रही थी | क्योंकि ना तो उसे सुबह ब्रेड पकोड़ा मिला, न दोपहर में पीली कड़ी और पापड़, और न ही शाम को विजय का बटर पनीर मसाला | रात सवा ग्यारह बजे जब एक लड़की को गेस्ट हाउस के बाहर फोन पर बात करते हुए देखा तब एक पल को तो मैं भौंचक्का रह गया!

धीमे-धीमे यह समझ आ रहा था कि अब रात 2 या 3 बजे तक जागे रहने से पहले ये सोचना पड़ेगा कि क्या ये वीकेंड चल रहा है | चार साल पहले की तरह आज फिर मैं एक नई चौखट पर खड़ा था | मगर वो "फर्स्ट-ईयराइट" वाला आभास जाने कहाँ गुम था | कंपनी के सारे सीनिअर के अच्छे बर्ताव को देख कर मन कर रहा था कि कोई तो एक बार फिर रैगिंग ले |

मगर इस बात में कोई संशय नहीं कि साथ में हरदम मौजूद था एक आत्म विश्वास | प्रत्येक पल एक गौरवपूर्ण एहसास था, अपनी पहचान में बिट्स पिलानी जुड़ जाने का | इन तमाम चीज़ों के बारे में गहन विचार चल ही रहे थे कि सिरहाने रखा मोबाइल घनघना उठा | समय हो चुका था सुबह के 7 बजे!

नोट- कहने को तो अभी बहुत कुछ बाकी है मगर अभी रात के 12 बज चुके हैं और मुझे सोने की चिंता है क्योंकि कल का दिन फिर सुबह 7 बजे शुरू होना है!

एक ख्वाब हूँ मैं

--भानुप्रिया वैष्णव

एक ख्वाब हूँ मैं
ख्वाहिशों का जहान हूँ मैं
झिलमिलाते तारों से सजे अम्बर की
रोशनी हूँ मैं

एक एहसास हूँ मैं
अजनबी राहों पे खोये दिल की दस्तक हूँ मैं
दो दिलों के दरमियाँ
एक कशिश हूँ मैं

एक नूर हूँ मैं
पलकों पे सजे अरमान हूँ मैं
खोये हुए मन की
मुस्कुराहट हूँ मैं

एक दर्पण हूँ मैं
मन की चाहत हूँ मैं
दिलों की एक
अनकही सी गुज़ारिश हूँ मैं

एक विश्वास हूँ मैं
दिलो की तमन्ना हूँ मैं
रूह को जो छु जाये
वो छवि हूँ मैं

एक ख्वाब हूँ मैं
ख्वाहिशों का जहान हूँ मैं.....

दूसरी दुनिया का आदमी

— सोमजी शुक्ला

वो शक्ल और सूरत से कैसा था, बताने में असमर्थ हूँ। पर हाँ, उसके हाव-भाव से ये पूर्णतय: स्पष्ट था कि वो काफी उदास और चिंतित था|

इंसानियत के नाते ही सही पर मैंने उससे पूछा "भई क्या बात है ? बहुत उदास दिखाई देते हो । कुछ मदद चाहिए क्या ?"

"हाँ, मैं उसके लिए काफी चिंतित हूँ । जाने उसपर क्या बीती होगी...जाने कैसी होगी..." उसने एक लम्बी ठँडी आह भरते हुए कहा।

"वो..वो कौन?" मैंने पूछा...

"वही जिससे मेरी शादी होने वाली थी। वो मुझसे बहुत प्यार करती थी और मैं भी उसे जी-जान से चाहता था।" वो अपनी प्रेम कहानी सुनाए चला जा रहा था और न जाने क्यों पर मैं भी उसकी कहानी में दिलचस्पी ले रहा था।

"फिर क्या हुआ?" मुझसे रहा न गया| मैं उसकी कहानी आगे सुनने को उत्सुक था।

"फिर क्या..उसके घर वाले नहीं माने। लेकिन हम एक-दूसरे के बिना भी तो नहीं रह सकते थे। एक दिन सुना कि उसके घर वालों ने जबरन उसकी शादी कहीं और तय कर दी।"

"फिर?"

"मैंने उसे मिलने की बहुत कोशिशें की पर....."

"पर क्या....." मैंने पूछा।

"पर मैं उसे मिल नहीं सका", उसने गहरी साँस छोडते हुए कहा, "और मैंने आत्म-हत्या कर ली।"

"...आत्म-हत्या !!!....पर तुम तो...."

"अब मैं जीवित व्यक्ति नहीं हूँ..."

"क्या?" मेरी उत्सुकता... डर में बदल गई थी?

"डरो मत, मैं तुम्हें कोई नुक्सान नहीं पहुँचाऊंगा। बस तुम मेरी थोड़ी-सी सहायता कर दो।"

"हाँ कहो" मैंने राहत की साँस ली पर अभी भी मेरे मन का डर पूरी तरह गया नहीं था|

"मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ, उसकी चाहत ही मुझे इस रूप में भी यहाँ खींच लाई है। मैं सिर्फ जानना चाहता हूँ कि वो ठीक तो है! कहीं मेरे मरने की खबर सुनकर उसने भी ....और मेरे माँ-बाप... क्या तुम मेरी मदद करोगे....."

".....अरे आज इतनी देर तक सो रहा है! नाश्ता तैयार है।" रसोई घर से माँ के तीखे स्वर ने मेरी नींद खोल दी।
उठ चाय-नाश्ता तैयार है।" रसोई घर से माँ के तीखे स्वर ने मेरी नींद खोल दी।

"ओह, आया माँ!"

मुझे उस दूसरी दुनिया के उस प्राणी से अपनी बातचीत अधूरी रह जाने का खेद था। काश! माँ ने 5-10 मिनट बाद आवाज लगाई होती तो कम से कम उसे इतना तो बता देता कि "अरे भाई, बेवजह परेशान हो रहे हो। यहाँ सब कुशल ही होंगे | तुम्हारे माँ-बाप भी ठीक-ठाक होंगे। और तुम्हारी वो... वो भी तुम्हें भूल चुकी होगी। जानते नहीं, शादी के बाद स्त्री का एक तरह से पुर्नजन्म होता है। और वैसे भी हम धरती के लोग मरे हुओं को याद करना अपशकुन मानते हैं। और भूल से भी कहीं अपने घर या उसके घर ना जा पहुँचना। जिनके लिए तुम इतने उदास और चिंतित हो, वो 'भूत-भूत' चिल्लाएंगे तुम्हें देखकर और दूर भागेंगे तुमसे।"

"अरे भईये, इस धरती के लोग यहीं के लोगों से प्यार निभा लें तो काफी है! तुम तो बहुत दूर जा चुके हो।" पर मुझे खेद है कि यह सब मैं उसे नहीं बता पाया।

मैंने कल को देखा है ...

— भुवनेश शर्मा

वक़्त की बंदिशों में सिमटते उस पल को देखा है ..
मैंने कल को देखा है !!

मैंने देखा है बहारों में चमन को जलते हुए
तो कभी रेगिस्तान में गुल को खिलते हुए देखा है ..
मैंने देखा है परवाने की यादों में उस शमा को जलते हुए
तो कभी उस परवाने को शमा में जलकर मरते देखा है ..
दरिया में डूब कर मैंने करीब से उसके तल को देखा है ..
मैंने कल को देखा है !!

मैंने देखा है एक परिंदे को जाल में फँसते हुए
तो कभी उसे आसमान में ऊँची उड़ान भरते देखा है ..
मैंने देखा है उस नादान को पिंजरे में क़ैद रोते हुए
तो कभी किसी कटे पेड़ पर उसे मलाल करते देखा है ..
घोसले के बाहर पाँव पसारते एक परिंदे के डर अचल को देखा है ..
मैंने कल को देखा है !!

मैंने देखा है एक अजनबी को करीब आते हुए
तो कभी एक दोस्त को अजनबी बनते देखा है ..
मैंने देखा है किसी को लफ़्ज़ों से खेलते हुए
तो कभी शब्दों को किसी की ज़िन्दगी से खेलते देखा है ..
सच को झूठ, झूठ को सच बनाते एक रकीब के छल को देखा है ..
मैंने कल को देखा है !!

मैंने देखा है किसी के सपनों को टूटते हुए
तो कभी एक इंसान को पल में बिखरते देखा है ..
मैंने देखा है किसी के अरमानों को जलते हुए
तो कभी उसपे हाथ सेकते मुखालिफ़ को देखा है ..
तन्हाई में एक पत्थर की आँखों से बहते निर्मल जल को देखा है ..

मैंने कल को देखा है !!

मैंने देखा है कभी एक बेज़ुबान जानवर को सजते संवरते हुए
तो कभी एक इंसान को ठण्ड में ठिठुर के मरते हुए देखा है ..
मैंने देखा है किसी को राम की इबादत करते हुए
तो कभी किसी को अल्लाह को पूजते देखा है ..
हर माहौल में अपने सर पे रखे माँ के उस आँचल को देखा है ..
मैंने कल को देखा है !!

वक़्त की बंदिशों में सिमटते उस पल को देखा है ..

मेरा माली

क्रोध ने मेरे ऑचल को पकड़ कर
मेरे अहम को हवा दी,
जब मेरे माली ने मेरी नाजुक टहनियों को
काट–काट कर तराशा।

बाड़ के उस पार पेड़ की उन्मादकता का अट्हास,
जिसे कोई छू न सका,
मेरे कलेजे को चीर गया।

विवशता जड़ता के हवाले होती गई,
बाड़ पार का पेड़ सभी मर्यादाओं को
लांघ परवान चढ़ता रहा।

मैं अपने माली की पैनी नजर के
तहत वक्त–वक्त पर तरशता रहा।
मेरा नियन्त्रित विकास
उस अल्हड़ पेड़ की उन्मादकताओं को तरसता रहा।

मेरा लम्बा मजबूत सीधा व नियन्त्रित तना
मुझे उस ऊँचाई पर ले आया
जहाँ मैं उस पेड़ को और अच्छे से
देख पाता, रश्क करता और तड़प जाता।

फिर एक रात
तूफान और आँधी
उन्मुक्त हुए।
मेरे नियन्त्रित वजूद ने
एक आश्चर्यजनक हादसा देखा
जब बाड़ पार का पेड़ चरमरा कर ढ़ह गया।

मेरा माली अगली भोर मेरे पास आया,
अपनी उन्हीं उंगलियों से मुझे सहलाया,
अश्रुपूर्ण नेत्रों ने उजड़े पेड़ को श्रद्धांजली दी
और छाती तान कर मेरे नियन्त्रित रूप को देखा
जो अब अल्हड़ताओं की अठखेलियाँ लिए परिपूर्ण था।

डॉ. देविका
भाषा विभाग, बिट्स पिलानी

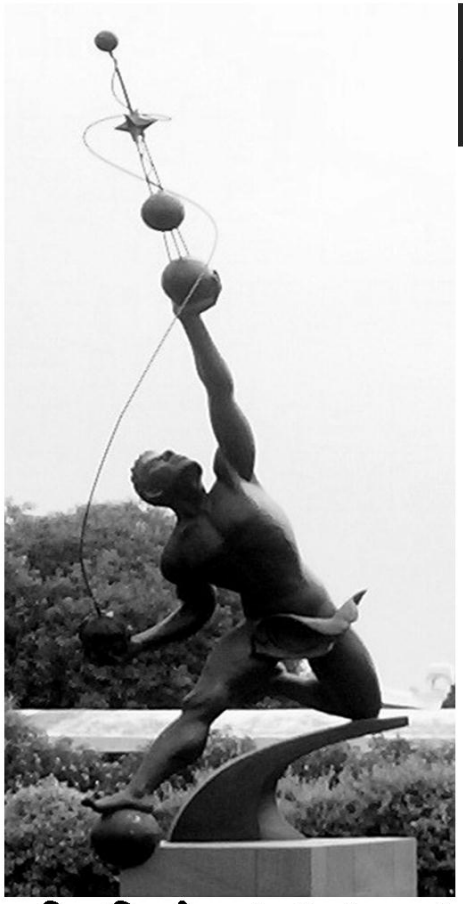

टाइम टू स्टार्ट-अप

बिट्स-पिलानी एक ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ पर छात्र हर दिन कुछ नया करने के विषय में सिर्फ सोचते ही नहीं हैं बल्कि करके कि भी दिखाते हैं | यहाँ के विद्यार्थी सिर्फ पढाई में ही अव्वल नहीं हैं अपितु नेतृत्व क्षमता व नित नए आविष्कार करने के साथ ही समाज के प्रति संवेदनशील भी हैं | कोई किसी प्रसिद्द संस्था का सीईओ है तो कोई समाजसेवी, कोई प्रमुख नेता है तो कोई जाना माना अभिनेता | यहाँ के छात्रों ने हर दिशा में बिट्स का परचम फहराया है| और सही भी है, बिट्स का अपने बच्चों के सम्पूर्ण विकास में शत प्रतिशत योगदान जो रहता है, हमेशा ही बच्चों को कुछ अलग, कुछ नया करने का प्रोत्साहन मिलता रहता है | कई ऐसे उदाहरण हैं बिट्स के छात्रों के जहाँ उन्होंने समाज के हित के लिए तो कहीं अपने जैसे विद्यार्थियों के लिए अनेक कार्य किये हैं|

अन्य महाविद्यालयों से परे बिट्स अपने छात्रों के संपूर्ण विकास के लिए एक उत्तम माहौल प्रदान करता है | यहाँ विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुसार विभिन्न तरह के इलेक्टिव्स चुन सकते हैं | द्वितीय और तृतीय वर्ष में क्लियो और एन.वी..सी. जैसे एलेक्टिव्स उन्हें वास्तविक उद्यमशीलता से अवगत कराते हैं | साथ ही बिट्स के स्टार्टअप्स को बढ़ावा देने में भी इनकी भूमिका अहम है | बिट्स में एक इंक्युबेशन सेंटर भी है | इस सब के साथ छात्रों की मदद करने के मामले में प्रोफेसरों का रिस्पांस भी सराहनीय है |

क्लियो और एन.वी.सी. का कोर्स डिजाईन ऐसा था कि कोर्स ख़त्म करते करते लगा कि मानो संपूर्ण मैनेजमेंट का ज्ञान हो गया हो | कुछ अलग करने के उत्साह ने भी जोखिम उठाने का साहस दिया |

–हर्षित गुप्ता

शार्प एज लर्निंग

जो कि बहुत ही कामयाब व हितकारी साबित हुए हैं | नए उद्यम स्थापित करने में बिट्सियन्स को महारत हासिल हो चुकी है | देश की कई नमी कम्पनियों के सर्वेसर्वा बिट्सियन्स हैं जिनमें ओनिडा, नियोकार्प और भारत फोर्ज जैसे नाम शामिल हैं | इन सभी ने बिट्स के इन्ही गलियारों से अपने सफर की शुरुआत की थी और कैम्पस से जाने के बाद भी पूरी लगन से अपने मुकाम की ओर कदम बढ़ाते रहे | आज भी कैम्पस में आपको ऐसे बहुत से "स्टार्ट-अप्स" मिल जायेंगे हालांकि उनमें से कुछ नवोदित हैं तो कुछ महज़ स्टार्ट-अप कहलाने की सीमा लांघने को बेताब हैं |

तो एक बिट्सियन को अपने स्टार्ट अप खोलने में क्या क्या दिक्कतें आ सकती हैं -

⇒ पिलानी में स्टार्ट-अप का कोई मार्केट न होना

⇒ आपात स्थिति में पिलानी का गाँव होना आड़े आ सकता है

⇒ यदि आपके ग्राहक पिलानी के बाहर से हैं तो यात्रा खर्च काफी बढ़ सकता है

वैसे बिट्स में रहकर अपना उद्यम स्थापित करना फायदे का सौदा भी हो सकता है, जैसे कि -

⇒ साथी बिट्सियन्स का सहयोग

⇒ कैम्पस आने वाली कम्पनियाँ

⇒ इनक्यूबेशन सेंटर

⇒ और हाँ ! बिट्स पिलानी का नाम

यदि कुल मिलाकर देखा जाए तो आप जिस कॉलेज में है वही आपकी सबसे बड़ी ताकत है | यहाँ के छात्र, यहाँ का शांतिपूर्वक वातावरण, कॉलेज से प्रदान किये गए इलेक्टिव कोर्सेस | बिट्स आपको स्टार्टअप शुरू करने के लिए हर चीज़ प्रदान भी करता है - प्रोफेसरों की मदद , इन्क्यूबेशन सेंटर, और बाहरी दुनिया से मिलाव सब थोड़ा-थोड़ा कर के आपके अन्दर की सोच को जागृत करने में सफल रहते है | तभी तो कहते हैं कि बिट्स-पिलानी . . . . इट्स मैजिक !!!

छुट्टियों में घर बैठे बैठे बोर होते हुए एक ख्याल आया कुछ नया करने का, पहले साल घर पर ही कोचिंग क्लासेस के लिए कंसल्टेंसी उपलब्ध करवाई और अगले साल जब बिट्स आए तो सोचा कि दूसरों के लिए जो कर रहे हैं क्यों न वो खुद के लिए ही किया जाये और इस तरह 2006 में शुरू हुआ यह सफर और 2011 में कंपनी सी.डी.एस. सोल्यूशंस रजिस्टर हुई | एक माह के अंतराल में ही यह कंपनी देश के टॉप 10 स्टार्टप्स में जगह बनाने में कामयाब रही |

किसी भी कंपनी के लिए पिलानी में मार्केट की कमी मुख्य परेशानी है | यहाँ का मौसम भी एक्सट्रीम होने के कारण कई बार परेशानी का विषय बन जाता है| हालाँकि बिट्स में होने का सबसे बड़ा फायदा यहाँ के छात्र ही है जो इंटर्नशिप के माध्यम से स्वयं का लाभ करने के साथ ही मेरे काम में भी कुशलतापूर्वक हाथ बटाते हैं | यहाँ का शांतिपूर्ण वातावरण भी मन को खूब भाता है |

–लोहित साहू

शारदा मंदिर की नज़र से ...

आज भी रोज़ की तरह ही चिड़ियाओं की चहचहाहट से मेरे दिन की शुरुआत हुई | आज भी माँ शारदे के दर्शन हेतु सुबह से ही बच्चों की चहलपहल बनी हुई है | जी हाँ आप सही समझे, मैं बिट्स-पिलानी का शारदा मंदिर | मेरी संस्थापना बिरला परिवार के द्वारा करवाई गयी| इस संस्थान पर माँ का आशीर्वाद सर्वदा बना रहा ये सोच कर मेरा निर्माण हुआ था और तब से लेकर आज तक मैंने ना जाने विद्यार्थियों को मंदिर में माँ का नमन करते, प्रार्थना करते देखा है|

"बिट्स"- इस संस्था से मुझे बहुत कुछ मिला है, यहाँ के बच्चों से सम्मान और असीमित प्यार| देशभर से आए अलग-अलग संस्कृति, जगह, और वातावरण में पले-बढ़े बच्चों को यहाँ पाकर मैं धन्य हो गया | बिट्स की खास बात ये है की यहाँ सारे काम बच्चे स्वयं ही सम्भालतें है | यहाँ के विभिन्न क्लब-डिपार्टमेंट अपने कार्य को बखूबी निभाते हैं | और हर साल नए बच्चों का चुनाव करके उन्हें अपने में घुला-मिला लेते हैं | कुछ इंट्रैक्शन तो मेरे ही प्रांगण में होते हैं इसलिए मैं चुने जाने वालों के मुखड़े की मुस्कान देखता हूँ तो वहीं निराशा की मार भी देखता हूँ | वहीं दूसरी तरफ कुछ छात्रों को अपना इंट्रो देता देख भी मज़ा आता है|

माँ के दर्शन के लिए कोई नियमित तौर पर आता है तो, कोई किसी क्लब में चयनित होने की तो कोई पढाई में अव्वल आने की अभिलाषा लिए लिए आता है | माँ के दर पर आने के इनके कारण चाहे अलग हों पर माँ के लिए जो प्रेम और श्रधा है वो सामान है | मेरे ठीक सामने ही बिट्स का मुख्य आकर्षण बिट्स घंटाघर है और इसी कारण बिट्स के सभी "फेस्ट" का भी मैं साक्षी रहता हूँ | इन त्यौहारों में मुझे तो भई खास तौर पर सांस्कृतिक "फेस्ट" ओएसिस की चकाचौंध रास आती है| सुना है की ये एशिया का दूसरा सबसे बड़ा फेस्ट है | दूर दूर के महाविद्यालयों की भागीदारी इस बात पर ठप्पा भी लगा देती है | ओएसिस के दौरान यहाँ का नज़ारा देखते ही बनता है जब सी-लॉन्स ढेरों स्टॉल्स से सजा होता है और विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं चल रही होती हैं| बच्चों के उत्साह और जवाँ दिलों के मेल को देख कर मैं प्रसन्नचित हो जाता हूँ|

पर इस वर्ष का नज़ारा कुछ छितर होने वाला है| बिट्स में चल रहे इस बदलाव के जहाँ फायदे है वहीं नुकसान भी हैं | जहाँ एक ओर अति सुन्दर और हरा-भरा सी- लॉन्स और डी- लॉन्स खुदा पड़ा है वहीं दूसरी ओर बच्चों को भी तकलीफ का सामना करना पड़ रहा है | इस खुदाई से वैसे तो मेरे और घंटाघर दोनों के ही अस्तित्व को खतरा है परन्तु बिट्स के विस्तार की इस योजना के परिणाम बहुत ही लाभकारी ओर फलदायी है |बस मेरी तो माँ से येही प्रार्थना है की ये कार्य सकुशलता से पूर्ण हो जाए |

परन्तु हर वर्ष का सबसे उबाऊ समय तो सत्र के अंत में आता है, जब महीनो तक मुझे ये प्यारे-प्यारे मुखड़े देखने को नही मिलते लेकिन नए चेहरों से मिलने का जोश मन में लिए जैसे-तैसे यह वक़्त गुजार लेता हूँ | मेरी तो बस येही प्रार्थना है कि ईश्वर की कृपा बनी रहे सब पर | और अब अलविदा बोलने से पहले क्यों न माँ का नमन किया जाए -

" ॐ या देवी सर्वभूतेषु मातृरुपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।। "

भारतीय गणतंत्र

मैंने यह कविता कक्षा 9 में गणतंत्र दिवस के दिन लिखी थी| तब भारत में बढ़ते भ्रष्टाचार से सभी चिंतित थे| आज भी स्थिति में कोई ख़ास बदलाव नहीं आया है; मेरी कविता आज मुझे ज्यादा प्रासंगिक लगती है|

– अमित उनियाल

कहते हैं कुछ लोग, हो गया था भारत आज़ाद,
पूछो तो कहते अंग्रेजों के जाने के बाद,
हमको देनी ही पड़ती है, उन लोगों की दाद,
दे गए जो हमको चिर-दासता का प्रसाद |

ख़त्म हुई सन सैंतालीस में उनकी तानाशाही,
चहुँ ओर थी गरम-नरम दल की ही वाह-वाही,
जंग जीत कर खुश हो रहे थे नेहरु व् गाँधी,
क्यूँकि ख़त्म हो गयी उस दिन आतंको की आंधी |

तप-संघर्षों से आखिर अपना देश हुआ स्वतंत्र,
प्रश्न बड़ा था आगे आया, चले कैसे राजतन्त्र,
बहुत सही थी तानाशाही, देश था जब परतंत्र,
अतः, सभी में था मतेक्य और दावा था लोकतंत्र |

इंतज़ार था सभी को जिसका, आ पहुंची वह घड़ी,
गणतंत्र दिवस, तय हुआ 26 जनवरी,
संप्रभु हो गया था अब भारत, चुनौतियाँ थी बड़ी,
धीरे-धीरे भारतीय गतिविधियाँ लोक हित को मुड़ी|

और आज ५० साल बाद भी -
यदि हर भारतवासी को प्राप्त है लोकतंत्र,
फिर क्यूँ चलते हैं, अक्सर उसके खिलाफ षड़यंत्र,
कर गए गोरे शायद कोई कलुषित तंत्र-मंत्र,
तभी उद्वेलित हो उठता है, अक्सर जनतंत्र|

बदलेंगे हम आज लोभी हर राजनेता सियासी,
तभी तो कहला पाएंगे, एक सच्चे भारतवासी,
कर देंगे गर मन-वतन से भ्रष्टाचार का अंत,
सही मायनों में महान तभी बनेगा,
विराट भारतीय गणतंत्र !!

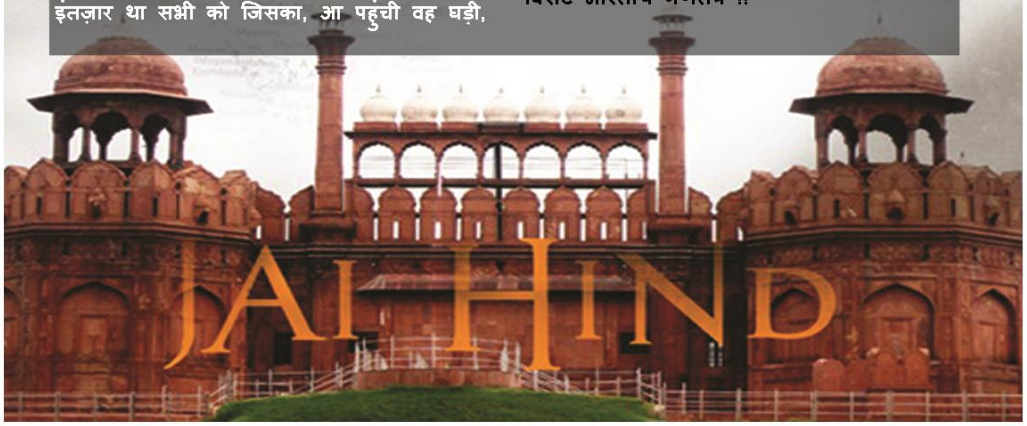

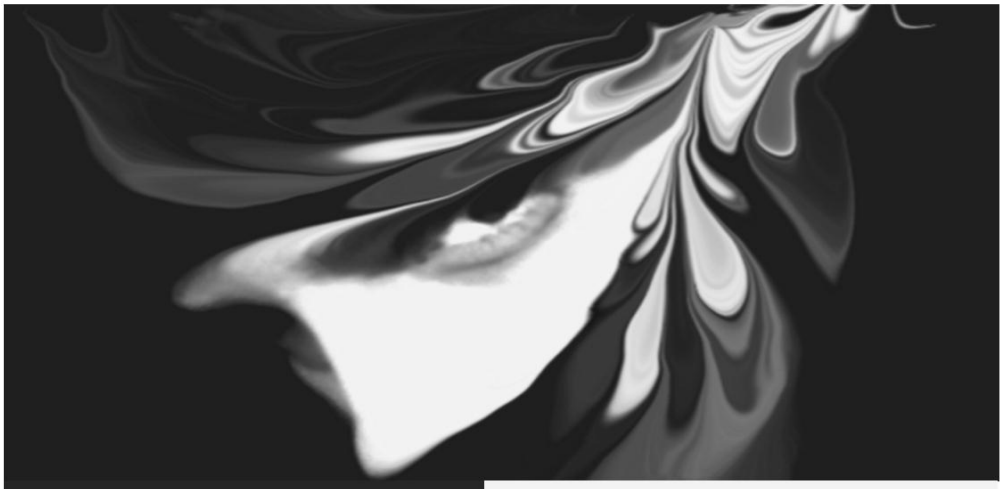

कश्मकश

- रुचिका शर्मा
भाषा विभाग, बिट्स पिलानी

गुजरे न थे उस आग से दोज़ख के लिए हम,

जूझे न थे तूफ़ान से सहरा के लिए हम,

दर्द को दबाया था हमने इक हँसी के लिए,

आँसू को छिपाया था हमने जिंदगी के लिए,

जिंदगी पाने को लड़ते थे जिंदगी से ही हम,

जन्नत अपनाने को झूठलाते थे कुदरत को ही हम,

गुजरे न थे उस आग से दोज़ख के लिए हम,

जूझे न थे तूफ़ान से सहरा के लिए हम|

परदे के पीछे

- हिना जैन

कांच के परदे के पीछे
एक मंजिल बसती है, पर
कांच के परदे के पीछे
एक राह है, जो चलती नहीं
कांच के परदे के पीछे
एक झूठ है जो दिखता है, पर
कांच के परदे के पीछे
एक सच है, जो सुनाई देता नहीं
कांच के परदे के पीछे
सावन की रिमझिम है, पर
कांच के परदे के पीछे
एक बिजली की सिर्फ चमक है, गरज नहीं
कांच के परदे के पीछे
लहराते हुए दरख़्त हैं, पर
कांच के परदे के पीछे
एक हसरतों की हवा है, जो बहती नहीं ||

बिट्स की प्रसिद्ध भूतिया कहानियाँ

आप सभी पाठकों से अनुरोध है कि यह पढ़ते समय अपना तर्क न लगायें | ये कहानियाँ हैं | इनका कोई साक्ष्य नहीं है, लेकिन ये हमारे बिट्सियन इतिहास का एक अनोखा हिस्सा रही हैं | कभी शिव जी में किसी सीनियर से तो कभी रेहड़ी वाले भैया से हम सभी ने ये कहानियाँ कहीं न कहीं सुन रखी हैं|

शिव गंगा बिट्स पिलानी का एक दर्शनीय स्थल था, सभी के लिये शांति से समय व्यतीत करने की उत्तम जगह थी, कई छात्र छात्राएं वहाँ मौज मस्ती करते थे, परन्तु एक दिन ऐसी घटना घटी कि शिव गंगा एकदम सुनसान हो गया | कहते हैं आज से कुछ वर्ष पहले, कनॉट स्थित एक व्यापारी का अपनी पत्नी के साथ कुछ वाद विवाद हुआ | वह झगड़ा बहुत बढ़ गया, तंग आकर वह औरत शांति के लिये शिव गंगा गयी रात में | जब वह बहुत देर तक वापस नहीं आई, तो उसका पति उसे ढूंढने शिव गंगा पहुंचा.... वहाँ उसने देखा की उसकी पत्नी उसकी तरफ पीठ करके खड़ी थी, उसने उसे आवाज लगाई परन्तु उसने नहीं सुना, तो वह धीरे धीरे पुल के पास गया और जैसे ही वह पुल के पास पहुँचा उसकी आँखें दहशत से फटी रह गई | पुल के पानी के अंदर उसकी पत्नी की लाश पड़ी थी | फ़िर उस आदमी ने उस औरत की ओर देखा तो वहाँ कोई नही था, वो वापस आने के लिये जैसे ही पलटा तो पीछे से उसकी पत्नी की आत्मा उसके शारीर के अंदर होते हुए निकल गई | वो व्यापारी डर के मारे बेहोश हो गया | सुबह जब लोगो ने उसे उठाया तो वो यही कहता रहा की उसकी पत्नी पानी में डूब गई, परन्तु पूरा पानी साफ़ करने पर भी कोई लाश नहीं मिली |आज भी कहा जाता है कि उस औरत की लाश पानी में ही हैं कहीं इसलिए हर साल शिव गंगा का पानी साफ़ किया जाता है एवं आज भी रात में वहाँ जाना उचित नहीं माना जाता |

बिट्स-पिलानी में जब भी भूत की बात आती है तो सबसे पहले गाँधी - 137 का चर्चा होता है | कहते हैं कि आस- पास वाले लड़कों से उसकी बहुत अच्छी मित्रता नहीं थी | एक ओएसिस की बात है, वो लड़का अपने रूम से बाहर नहीं निकला | बहुत अच्छी मित्रता न होने के कारण किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया | पर ओएसिस समाप्त होने के बाद भी वो रूम से बाहर नहीं निकला तो लोगों को चिंता हु | जब उसका रूम खोला गया तो देखा कि पूरा कमरा खून से लाल है और उसके शरीर के टुकड़े अलमारी में भरे हैं | कुछ पता नहीं चला कि ये किसने किया, परन्तु यही माना जाता है कि उसकी प्रेमिका के परिवार वाले रूढ़ीवादी प्रकृति के थे | उनसे ये प्रेम प्रसंग सहन नहीं हुआ, और उन्होंने ही उसकी हत्या की | सच क्या है ये तो कोई नहीं जानता, लेकिन इस घटना के अगले साल जिस लड़के को वो रूम दिया गया, वो वहाँ ज़्यादा दिन रुक नहीं सका | लोगों के डराने के कारण या शायद उस कमरे में होने वाली असाधारण गतिविधियों के कारण एक ही सेमेस्टर में वो रूम छोड़ कर चला गया | उसके बाद से सभी छात्रों ने उस कमरे में रहने से इनकार कर दिया | कहा जाता है आप उस कमरे के पास एक अजीब सा डर महसूस कर सकते हैं और जों भी उस कमरे में रहता है उसे अजीब-अजीब सी पागल कर देने वाली आवाजें सुने देती हैं और दीवारों पे भूतिया तसवीरें दिखाई देती हैं | वर्तमान स्थिति ये है किगाँधी - 137 में सुप्रिटेंडेंट महोदय रहते हैं, और उनसे पूछे जाने पर वो कहते हैं, "*हाँ मैं ही तो हूँ यहाँ का भूत*!!

मीरा भवन के पुराने ब्लाक की एक घटना है | कहा जाता है कि उस समय मीरा भवन के छठे ब्लाक की बाउंड्री ज़्यादा ऊँची नहीं थी | एक कमरे में दो लडकियाँ रहती थीं | कॉम्प्री से एक रात पहले एक लड़की अपने सुपर साइडी के रूम में पढने चली गई | उसने पूरी रात पढाई करने का प्लान बनाया था | रात को उसे कैल्सी की ज़रूरत पड़ी तो वो अपने रूम वापस आई | वहाँ उसने देखा कि दरवाज़े में कुण्डी नहीं लगी थी, बस दरवाज़ा अटका हुआ था | उसने अपने रूमी को परेशान न करने का निर्णय किया और वैसे भी कैल्सी दरवाज़े के पास वाली खिड़की पर रखा हुआ था | उसने धीरे से हाथ अन्दर डाला और चुपचाप कैल्सी निकाल कर वापस पढने चली गई | अगली सुबह कॉम्प्री के बाद जब वो वापस अपने रूम आई तो उसने देखा उसकी रूमी का शरीर ज़मीन खून से सना पड़ा था. शरीर पर ज़ुल्म के निशाँ थे और दीवार पर खून से लिखा हुआ था ....*"लाइट न जलाने के लिए धन्यवाद !!"*

काश ऐसा होता !

यूँही तन्हा राह चलते कोई अपना सा मिल जाए तो,
काश कभी आकाश समुन्दर में समा जाए तो |
कल्पना से परे कोई हादसा कभी चौंकाए तो,
कभी ख्वाबों की वो दुनिया हकीकत से टकराए तो ||

यूँ ही कभी एकांत में जब मन अपनी चंचल गति से भाग रहा था तो अनायास ही एक ख़याल मन में कौंध उठा | अगर मैं जो हूँ वो ना होता तो? जिस शख्स को मैं आइने में देख रहा हूँ, वो कोई और होता तो?? दुनिया जैसी प्रतीत होती है, उससे बिलकुल अलग होती तो??? और ऐसे ही ना जाने कितने सवाल मन में उठे जिनके जवाब सोचकर ही आश्चर्य और उपहास की स्थिति उत्पन्न हो उठी | उस पल मुझे अहसास हुआ कि ईश्वर का भी ये अजब खेल है जो मेरे दिमाग में मेरे और मेरे आसपास के इस संसार के अस्तित्व के प्रति ही आशंका पैदा होने लगी |

खैर बचपन के ऐसे कई बेमायने किस्सों को तेज रफ़्तार ज़िन्दगी में पीछे छोड़ते हुए मैं कॉलेज की दुनिया में प्रवेश कर गया | परन्तु यहाँ आकर ऐसा लगा मानो उस बचपन को फिर से जी लेने का एक मौका मिल गया हो मुझे | शहरी शोर-शराबे से कोसों दूर बसी बिट्स पिलानी की इस अनोखी दुनिया ने मेरे अंतर्मन में ख्वाबों की उस दुनिया में असीम उड़ान लगाने की चाह पुनः जगा दी | आए दिन दोस्तों की महफ़िल में बैठकर हर दिल के अंदर छुपे राज़ खोलते हुए, सारे जहां की बातें सुनते और करते हुए, उनके सपनों और आकांक्षाओं को जानते हुए मैंने कल्पना की दुनिया को और भी करीब से समझा| इस कल्पना शक्ति को और मज़बूत करने के लिए यहाँ बचपन के कार्टून तो नहीं थे परन्तु *हीरोज़, डैक्स्टर, बिग बैंग थ्योरी* आदि अतिप्रचलित टी.वी. सिरीज़ अवश्य थीं|

"सोच अगर बिट्स में A2 के छात्र को 70 लाख का पैकेज मिल जाए तो?"
या "मान ले बिट्स में A7 नहीं होती तो?"

तबसे लेकर आज तक तो एक दिन ऐसा नहीं बीता जब बिट्स की किसी भी चीज़ को मैं अपनी काल्पनिक दुनिया से ना जोड़ के देखूं | कभी कृष्णा-गांधी मार्ग पर उड़ रहे नादान परिंदों को देखकर सोच में पड़ जाता हूँ कि अगर मुझे उड़ने का मौका मिले तो मैं किस ऊँचाई पर जाकर बैठना चाहूँगा | क्या आसमान से ज़मीन को देखकर मुझे डर लगेगा? क्या मैं उड़ता हुआ परिंदा बनकर मानव जीवन पाने की इच्छा रखूँगा??? खैर इनके जवाब तो मैं खुद भी नहीं जनता |

आगे पढ़ने से पहले मेरे पाठकों के लिए यह जानना ज़रुरी है कि मैं अत्यंत मेहनत से अध्ययन करके बिट्स जैसे प्रतिष्ठित कॉलेज में सिविल(A2) जैसे कोर संकाय में प्रवेश लेकर आया हूँ| लेकिन पहली बार जब बिट्स में A7 के छात्रों का लाजवाब प्लेसमेंट देखा और साथ ही अन्य कुछ संकाय जैसे A5, A2 की खस्ता हालत देखी तो मन को कल्पना की उड़ान भरने का इससे बेहतर मौका ना मिला | जल्द ही किसी अकेली तन्हा रात को भवन के किसी गलियारे में हम सिविल के कुछ छात्र महफ़िल लगाकर बैठ गए और फिर शुरू हुआ हवाई किले बनाने का खुशनुमा सिलसिला | "सोच अगर बिट्स में A2 के छात्र को 70 लाख का पैकेज मिल जाए तो?" या "मान ले बिट्स में A7 नहीं होती तो?" "अरे बिट्स में छोड़, सोच अगर दुनिया में ही कंप्यूटर साइंस ना होती तो?" और बस मन को प्रफुल्लित करने का यह सिलसिला अब रोज़ की बात हो गयी है|

यदि यहाँ महिला आरक्षण लागू हो जाए तो ...अगर इंजीनियरिंग नहीं करते तो क्या करते??? अनगिनत सवाल, अंतहीन कल्पनाएं और असीमित सपने...इन सबके बीच बस इतना याद रखना ज़रुरी है कि ये ज़िन्दगी कहीं "काश" में ना गुज़र जाए|

यूँ तो बिट्स में आरक्षण के ना होने से सभी काफ़ी संतुष्ट प्रतीत होते हैं परन्तु अंदर ही अंदर कहीं हर मासूम बालक के मन में ये ख्याल ज़रूर आता है कि यदि यहाँ महिला आरक्षण लागू हो जाए तो कैसा होगा!!! कड़वी हकीकत को क़ुबूल करने की जगह हम उस खूबसूरत दुनिया की कल्पना करते हैं जहाँ बिट्स में हर एक छात्र के मुकाबले 3 छात्राएँ पढ़तीं | मंज़र कुछ ऐसा होता कि ओएसिस पर डी.यू. की बंदियों से ज़्यादा बिट्स की जन्नत देखने के लिए बंदे आते | ये सोच शायद हर बिट्सियन बंदे के दिमाग में किसी ना किसी समय ज़रूर आई होगी|

इस कल्पना की उड़ान की कोई सीमा नहीं है | आए दिन हर बिट्सियन जब अपने बिस्तर पर पड़ा अनमने ख्वाब देखता है तो कल्पना के रोचक समुन्दर में वो कई गोते लगाता रहता है | अगर मैं बिट्स में कोई क्लब खोलता तो उसका क्या नाम रखता? अगर इन ब्रंचेज़ के कोड कुछ और रखने होते तो हम क्या रखते?? अगर बिट्स नहीं आते तो कहाँ जाते...अगर इंजीनियरिंग नहीं करते तो क्या करते??? अनगिनत सवाल, अंतहीन कल्पनाएं और असीमित सपने...इन सबके बीच बस इतना याद रखना ज़रुरी है कि ये ज़िन्दगी कहीं "काश" में ना गुज़र जाए| हर सपने को सच्चाई के करीब लाओ, हर कल्पना को हकीकत के साँचे में ढालो और जो बदलाव तुम देखना चाहो वो खुद लेकर आओ | ज़िन्दगी बहुत खूबसूरत है मगर इसकी ख़ूबसूरती देखना आपकी अपनी कल्पना पर निर्भर करता है |

— ईशान श्रीवास्तव

मेरी चाहत

— नीति पोखरना

एक ऐसा गीत गाना चाहती हूँ, मैं...
खुशी हो या गम, बस मुस्कराना चाहती हूँ, मैं...

यारों से यारी तो हर कोई निभाता है...
दुश्मनों को भी अपना दोस्त बनाना चाहती हूँ, मैं...

जो हम उड़े ऊँचाई पे अकेले, तो क्या नया किया...
साथ में हर किसी के पंख फैलाना चाहती हूँ, मैं...

बस आनंद हो हर पल, और महके यह गुलशन सारा...
हर किसी के गम को, अपना बनाना चाहती हूँ, मैं...

ए खुदा, तमन्ना बस इतनी सी है, कबूल करना...
मुस्कराते हुए ही तेरे पास आना चाहती हूँ, मैं...

एक ऐसा गीत गाना चाहती हूँ, मैं... ...

आईना मेरा मुझसे लड़ता नहीं अब....

– तृप्ति रावल

आयना मेरा मुझसे लड़ता नहीं अब,
अपने साए से मैं डरता नहीं अब|
एक नया मोड़, एक नया सफ़र है यह,
या यह रास्ता मुझे छल रहा है?
तेरी सोहबत का असर है यह,
या मौसम बदल रहा है?

रोशनी ज़रा रोशन ज्यादा है अब,
मेरा अँधेरे मिटाने का इरादा है अब|
मैंने आँखें खोल दी हैं अपनी,
या फिर से सूरज निकल रहा है?
तेरी सोहबत का असर है यह,
या मौसम बदल रहा है?

हर लम्हा मुझे आज़माता है अब,
फिर भी पास बुलाता है अब |
जी करता है मुट्ठी में बाँध लूँ,
रेत से वक़्त जो फिसल रहा है |
तेरी सोहबत का असर है यह,
या मौसम बदल रहा है?

किसी समय ऐसा भी हुआ था ...

बिट्स पिलानी की स्थापना सन् 1929 में हुई और 1964 में यह डीम्ड यूनिवर्सिटी बना यानी कि यह कॉलेज डीम्ड यूनिवर्सिटी के तौर पर 50 साल की उम्र छूने जा रहा है। लेकिन इस विश्वविद्यालय का इतिहास सिर्फ अच्छी चीज़ों और घटनाओं से नहीं भरा है | यहाँ हत्या की कहानी भी मशहूर है और हड़ताल की कहानी भी प्रसिद्ध है। इनमें कुछ कहानी बनाई गईं हैं तो कुछ में मिर्च मसाला डाल कर भी परोसा गया है |शुरू के सालों में यहाँ 2 हड़ताल विद्यार्थियों के कारण हुई।

1972 की हड़ताल बिट्स के इतिहास में हुई सबसे बड़ी हड़ताल है | यह हड़ताल 40 दिनों तक चली | हालांकि हर व्यक्ति इस हड़ताल का कारण अलग बताता है परन्तु फीस में हुई अत्याधिक वृद्धि एक प्रमुख कारण माना जाता है | उस समय न बिजली थी न पानी और तो और मेस तब इंस्टी के हाथ में होने के कारण ठप थी | पूर्ण रूप से कर्फ्यू का माहौल था | बच्चे डायरेक्टर के घर के सामने भजन गाकर अपना गुस्सा निकालते थे | खाना हमेशा कैम्पस के बाहर नूतन में होता था वरना रेहड़ियों में | कुछ बच्चे तो घर भी निकल लिए थे | पूरा कैम्पस अनुशासनहीनता की बीमारी में जकड़ा हुआ था | 1800 के आसपास शिष्यों पर जब लाठी का वार हुआ तब तो सारी हदें पार हो गईं थी | ऐसा लगा था मानो इंस्टी और छात्र कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि पर है और पुलिस की लाठियाँ, अर्जुन के बाण| कोई नहीं बख्शा गया |

1976 में फिर एक एक महीने की हड़ताल हुई पर तब मेस छात्रों के हाथ में थी इसलिए मेस खुली रही| इस वर्ष की हड़ताल इतनी गंभीर नहीं थी पर इस बार भी हड़ताल का मुख्य कारण फीस में वृद्धि माना जाता है | 1968 में मेस कर्मचारियों द्वारा की गई हड़ताल बहुत गिने चुने लोग ही जानते हैं| इस हड़ताल का मुख्य कारण कम तनख्वा थी| सुनने में आता है कि सारे मेस कर्मचारी उनके सामान सहित निकाल दिए गए थे|

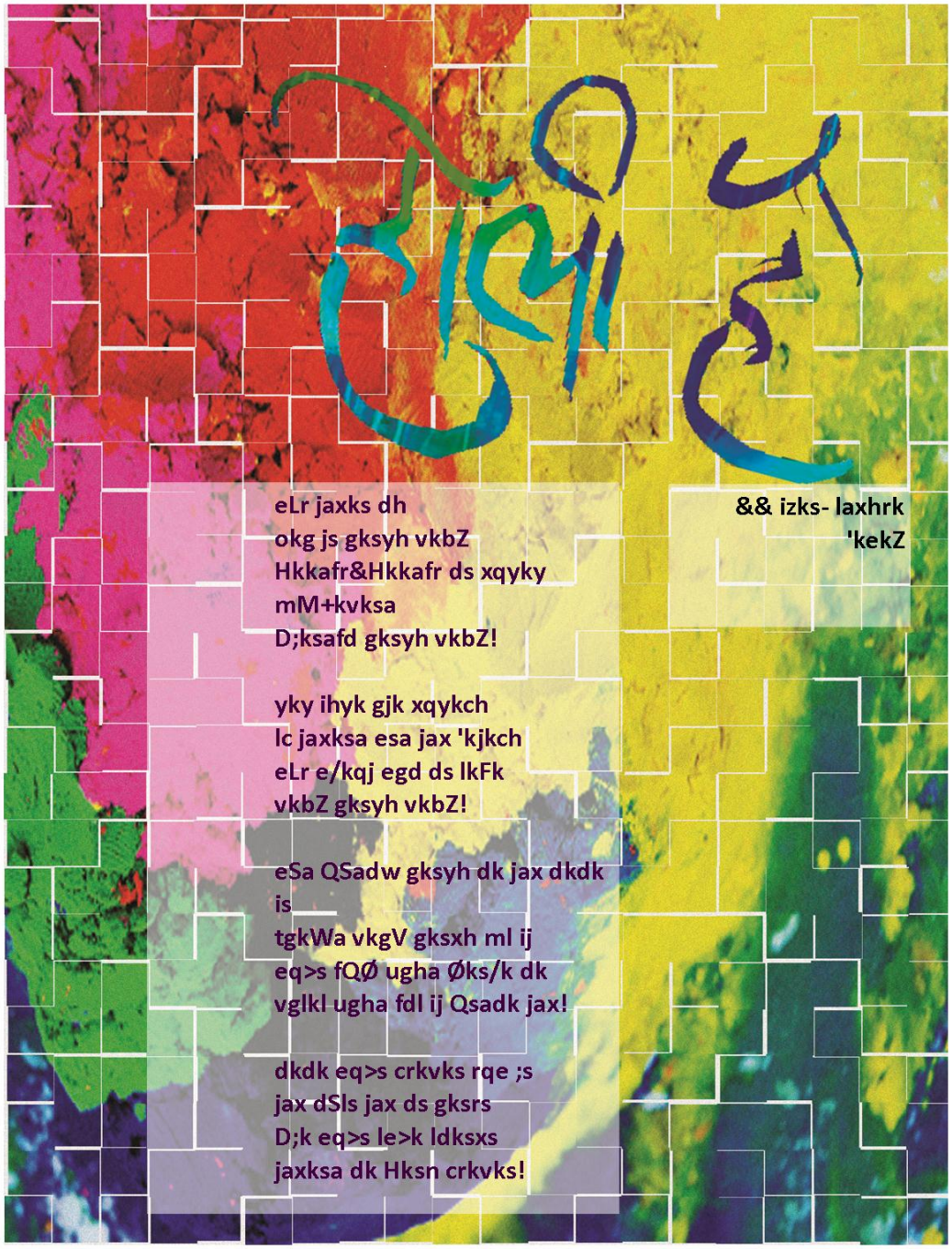

आप बिट्सियन हैं !

" यदि "CP2 में ज़ुक" कहने पर आपको अत्यंत गर्व महसूस होता है, तो ES2 में लगने वाले D की कसम आप बिट्सियन हैं | "

" साइकल चलाते चलाते अगर आपको शक होने लगे कि लाइफ में कभी बैक चलाने को मिलेगी भी या नहीं, तो कसम उस सपने में आने वाली हायाबुसा की, आप बिट्सियन हैं | "

" पंछी, नदियाँ, पवन के झोंके आदि जब आपके दिमाग में गूंजने लगें, अगले दिन पक्का आपका टेस्ट है ! "

" अगर साधारण कुत्ते आपके विंग में और शिकारी कुत्ते आपके लैपटॉप में पाए जाते हैं, आप बिट्सियन हैं | "

" बिट्सियनस् के लिए सबसे छोटा चुटकुला - B1A2 | "

" जिस गाँव में आप रहते हैं अगर वहाँ एयर स्ट्रिप है, मगर रेलवे स्टेशन नहीं तो आप बिट्सियन हैं | "

" कहीं घूमने ना जा पाने,
गर्म हवाएं खाने,
ठण्ड में ठिठुरना एकदम आम लगे,
अगर ऐसी आपकी कहानी है..
घर पे लड्डू खाने,
विदेश यात्रा जाने,
कंपनी में हरी पत्ती पाने के बाद भी दिल ना लगे,
तो जन्नत आपकी पिलानी है | "

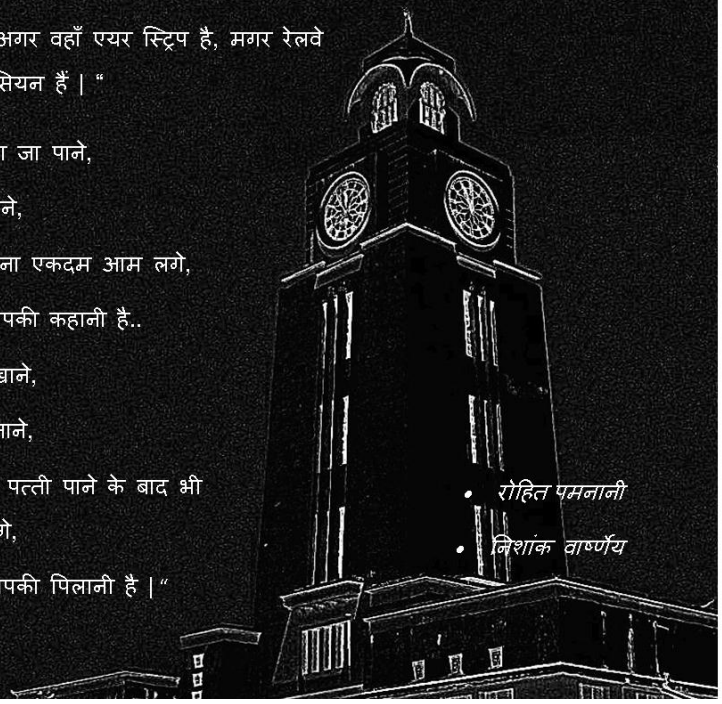

- *रोहित पमनानी*
- *निशांक वार्ष्णेय*

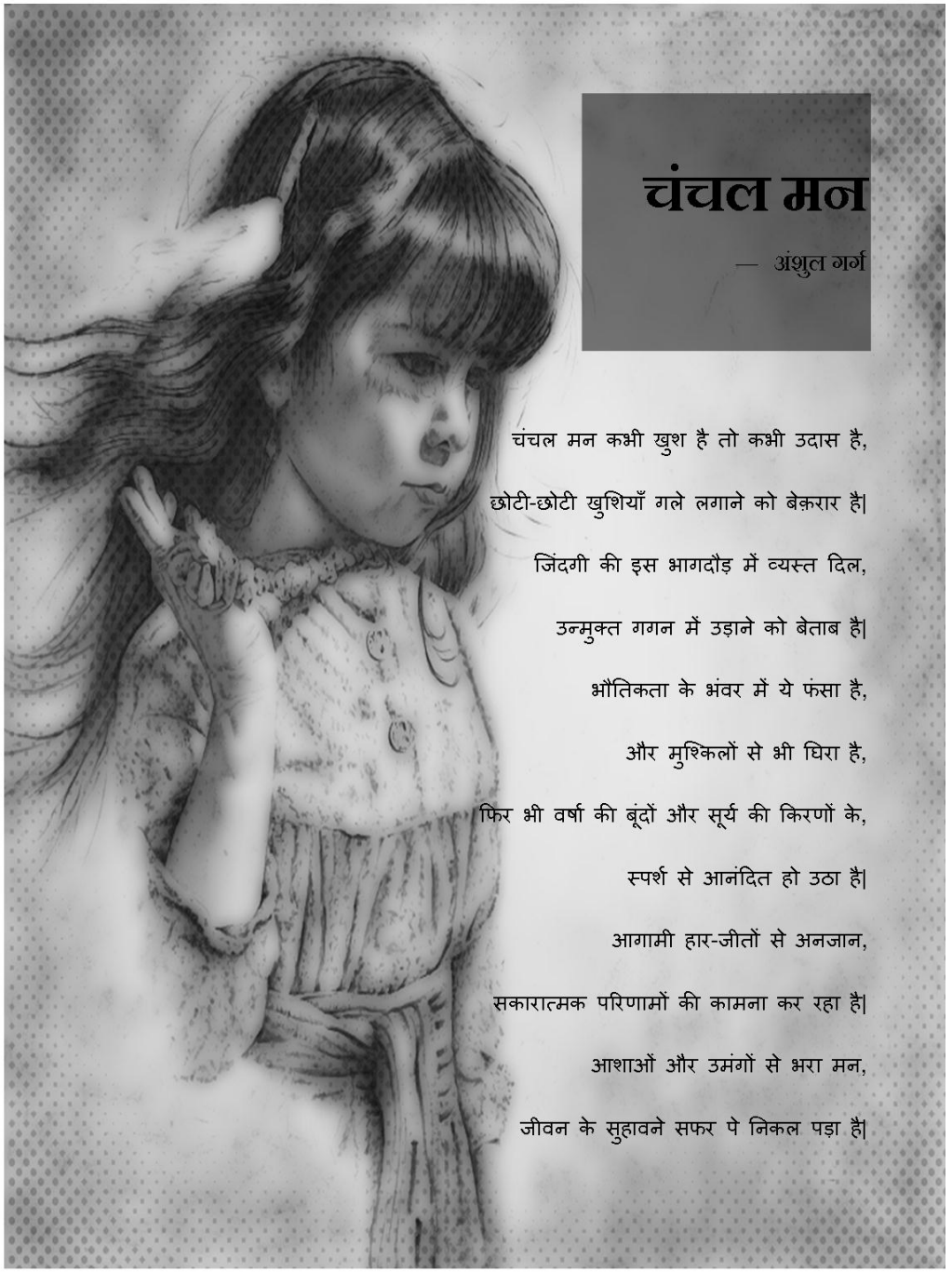

चंचल मन

— अंशुल गर्ग

चंचल मन कभी खुश है तो कभी उदास है,
छोटी-छोटी खुशियाँ गले लगाने को बेक़रार है|
जिंदगी की इस भागदौड़ में व्यस्त दिल,
उन्मुक्त गगन में उड़ाने को बेताब है|
भौतिकता के भंवर में ये फंसा है,
और मुश्किलों से भी घिरा है,
फिर भी वर्षा की बूंदों और सूर्य की किरणों के,
स्पर्श से आनंदित हो उठा है|
आगामी हार-जीतों से अनजान,
सकारात्मक परिणामों की कामना कर रहा है|
आशाओं और उमंगों से भरा मन,
जीवन के सुहावने सफर पे निकल पड़ा है|

बचपन से बुढ़ापा

–प्रतीक माहेश्वरी

बिट्स-पिलानी में पहला दिन एक नए जन्म की तरह होता है

दुनिया की सारी रस्मों और रिवाजों को धता बताते हुए हम बिट्सियन अपनी ही मस्ती में मग्न रहते हैं

इस छोटे से कैम्पस में बीते हर साल के साथ बचपन से यौवन और बुढ़ापे तक सफर तय कर लेती है ज़िंदगी

यहाँ बिताया हर पल अपनी एक अलग छाप छोड़ जाता है हमारे मानस पर

बिट्स में बीते चार सालों के इन्हीं मधुर अनुभवों को अपने में संजोय ये कहानी है बचपन से बुढ़ापे की...

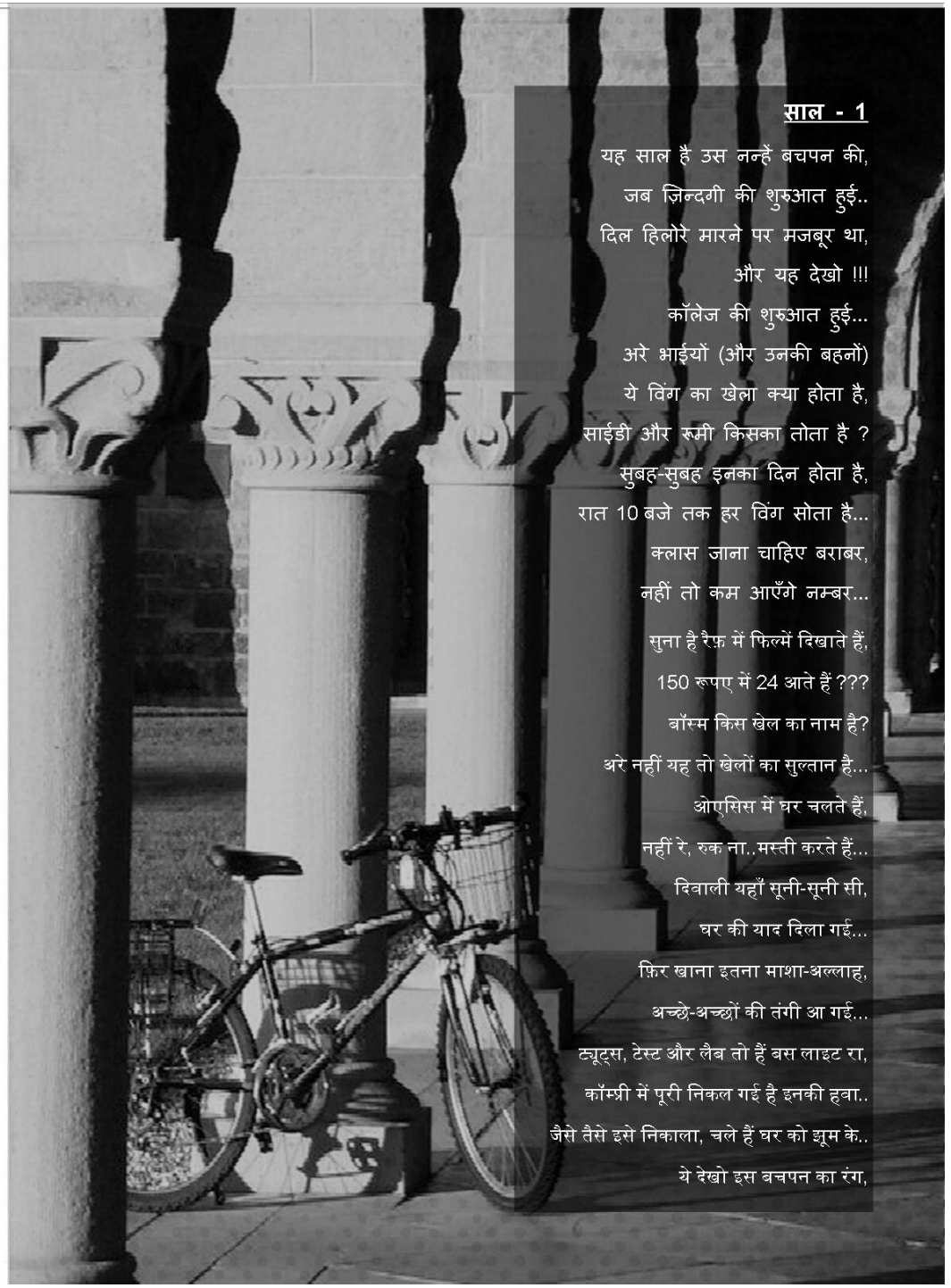

साल - 1

यह साल है उस नन्हें बचपन की,
जब ज़िन्दगी की शुरुआत हुई..
दिल हिलोरे मारने पर मजबूर था,
और यह देखो !!!
कॉलेज की शुरुआत हुई...
अरे भाईयों (और उनकी बहनों)
ये विंग का खेला क्या होता है,
साईडी और रूमी किसका तोता है ?
सुबह-सुबह इनका दिन होता है,
रात 10 बजे तक हर विंग सोता है...
क्लास जाना चाहिए बराबर,
नहीं तो कम आएँगे नम्बर...
सुना है रैफ़ में फिल्में दिखाते हैं,
150 रूपए में 24 आते हैं ???
बॉस्म किस खेल का नाम है?
अरे नहीं यह तो खेलों का सुल्तान है...
ओएसिस में घर चलते हैं,
नहीं रे, रुक ना..मस्ती करते हैं...
दिवाली यहाँ सूनी-सूनी सी,
घर की याद दिला गई...
फ़िर खाना इतना माशा-अल्लाह,
अच्छे-अच्छों की तंगी आ गई...
ट्यूट्स, टेस्ट और लैब तो हैं बस लाइट रा,
कॉम्प्री में पूरी निकल गई है इनकी हवा..
जैसे तैसे इसे निकाला, चले हैं घर को झूम के..
ये देखो इस बचपन का रंग,

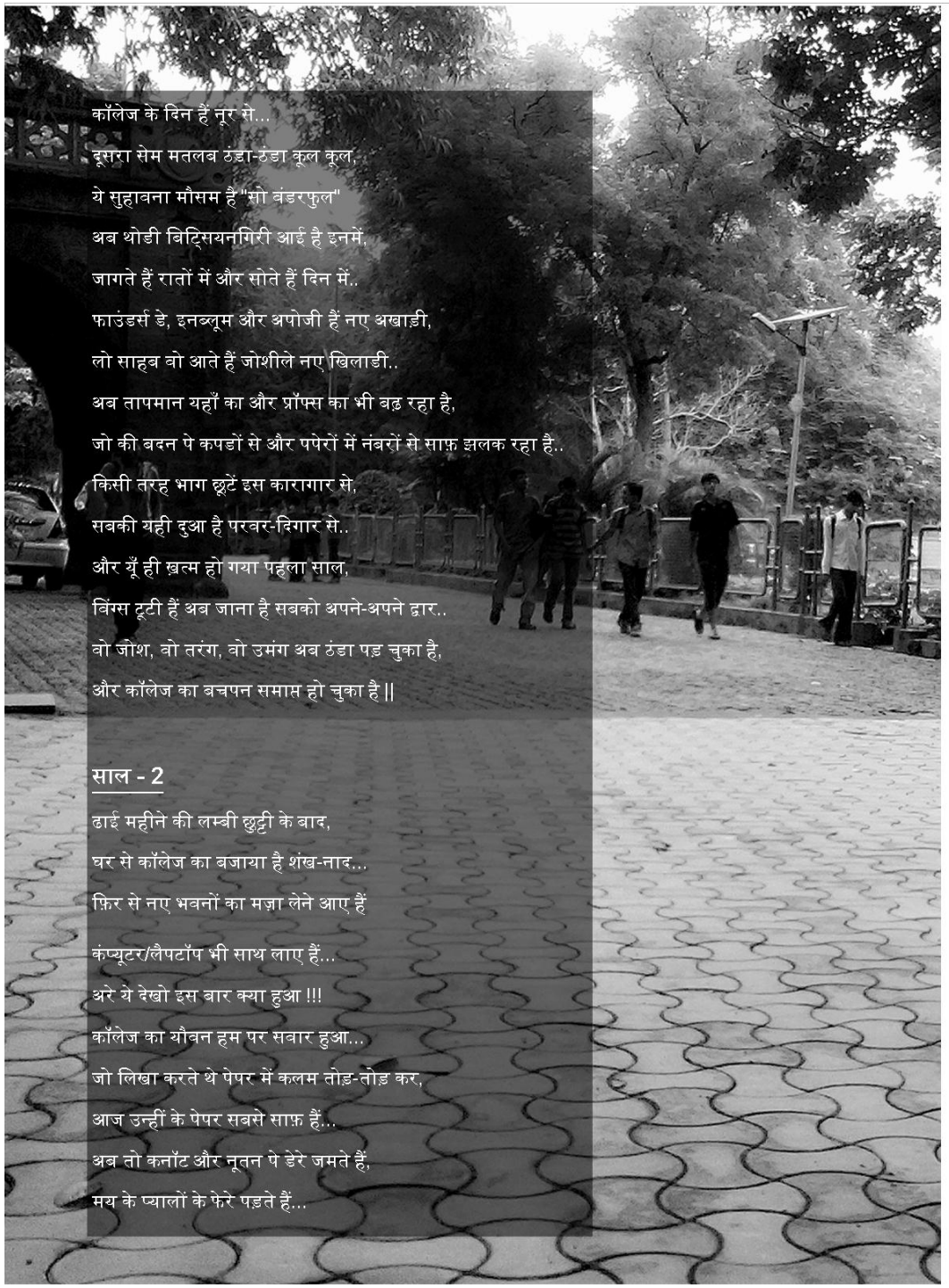

कॉलेज के दिन हैं नूर से...
दूसरा सेम मतलब ठंडा-ठंडा कूल कूल,
ये सुहावना मौसम है "सो वंडरफुल"
अब थोडी बिट्सियनगिरी आई है इनमें,
जागते हैं रातों में और सोते हैं दिन में..
फाउंडर्स डे, इनब्लूम और अपोजी हैं नए अखाड़ी,
लो साहब वो आते हैं जोशीले नए खिलाडी..
अब तापमान यहाँ का और प्रॉफ्स का भी बढ़ रहा है,
जो की बदन पे कपडों से और पपेरों में नंबरों से साफ़ झलक रहा है..
किसी तरह भाग छूटें इस कारागार से,
सबकी यही दुआ है परवर-दिगार से..
और यूँ ही ख़त्म हो गया पहला साल,
विंग्स टूटी हैं अब जाना है सबको अपने-अपने द्वार..
वो जोश, वो तरंग, वो उमंग अब ठंडा पड़ चुका है,
और कॉलेज का बचपन समाप्त हो चुका है ||

साल - 2

ढाई महीने की लम्बी छुट्टी के बाद,
घर से कॉलेज का बजाया है शंख-नाद...
फ़िर से नए भवनों का मज़ा लेने आए हैं
कंप्यूटर/लैपटॉप भी साथ लाए हैं...
अरे ये देखो इस बार क्या हुआ !!!
कॉलेज का यौवन हम पर सवार हुआ...
जो लिखा करते थे पेपर में कलम तोड़-तोड़ कर,
आज उन्हीं के पेपर सबसे साफ़ हैं...
अब तो कनॉट और नूतन पे डेरे जमते हैं,
मय के प्यालों के फेरे पड़ते हैं...

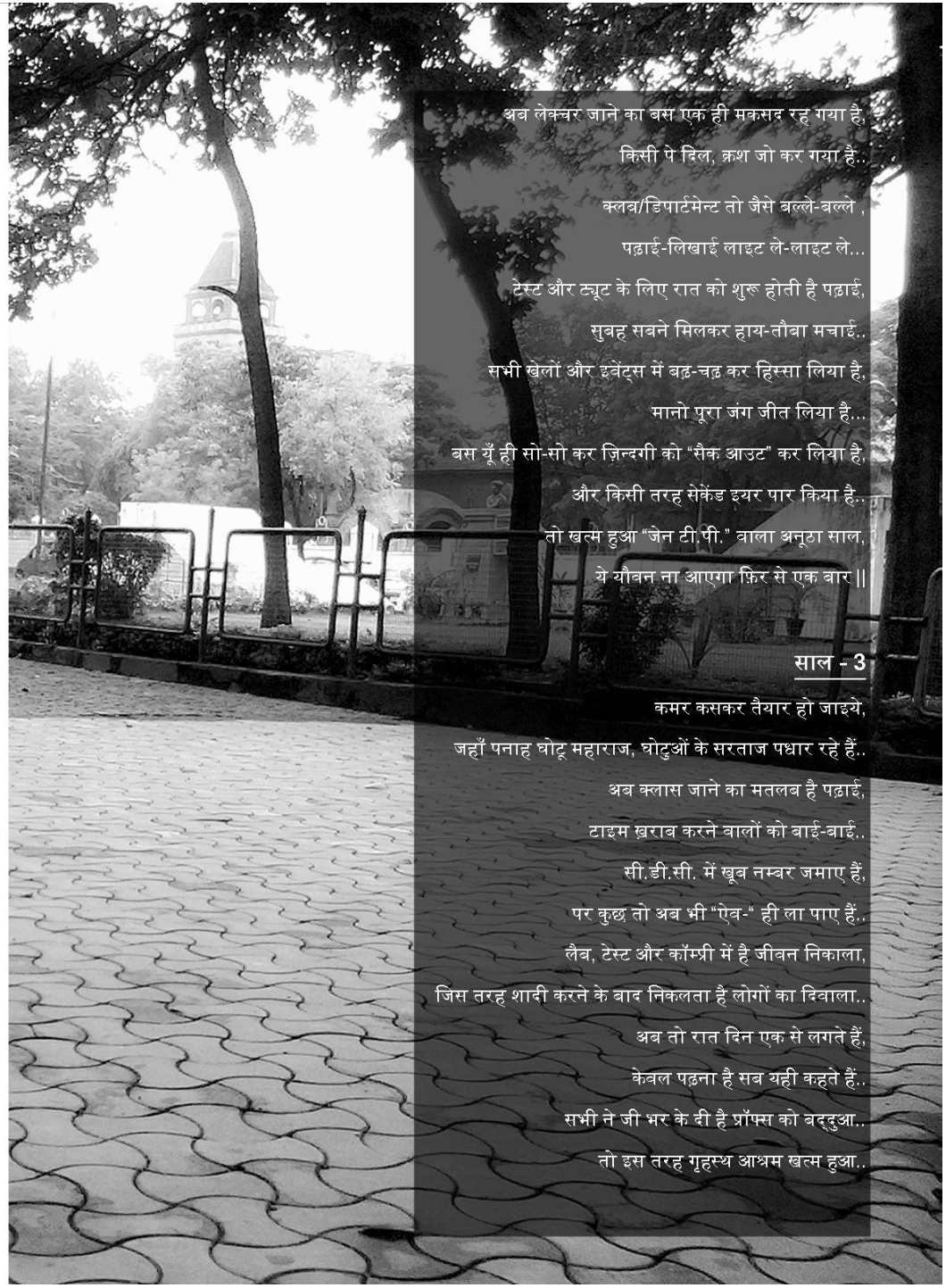

अब लेक्चर जाने का बस एक ही मकसद रह गया है,
किसी पे दिल, क्रश जो कर गया है..
क्लब/डिपार्टमेन्ट तो जैसे बल्ले-बल्ले ,
पढ़ाई-लिखाई लाइट ले-लाइट ले...
टेस्ट और ट्यूट के लिए रात को शुरू होती है पढ़ाई,
सुबह सबने मिलकर हाय-तौबा मचाई..
सभी खेलों और इवेंट्स में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया है,
मानो पूरा जंग जीत लिया है...
बस यूँ ही सो-सो कर ज़िन्दगी को "सैक आउट" कर लिया है,
और किसी तरह सेकेंड इयर पार किया है..
तो खत्म हुआ "जेन टी.पी." वाला अनूठा साल,
ये यौवन ना आएगा फ़िर से एक बार ||

साल - 3

कमर कसकर तैयार हो जाइये,
जहाँ पनाह घोटू महाराज, घोटुओं के सरताज पधार रहे हैं..
अब क्लास जाने का मतलब है पढ़ाई,
टाइम ख़राब करने वालों को बाई-बाई..
सी.डी.सी. में खूब नम्बर जमाए हैं,
पर कुछ तो अब भी "ऐव-" ही ला पाए हैं..
लैब, टेस्ट और कॉम्प्री में है जीवन निकाला,
जिस तरह शादी करने के बाद निकलता है लोगों का दिवाला..
अब तो रात दिन एक से लगते हैं,
केवल पढ़ना है सब यही कहते हैं..
सभी ने जी भर के दी है प्रॉफ्स को बद्दुआ..
तो इस तरह गृहस्थ आश्रम खत्म हुआ..

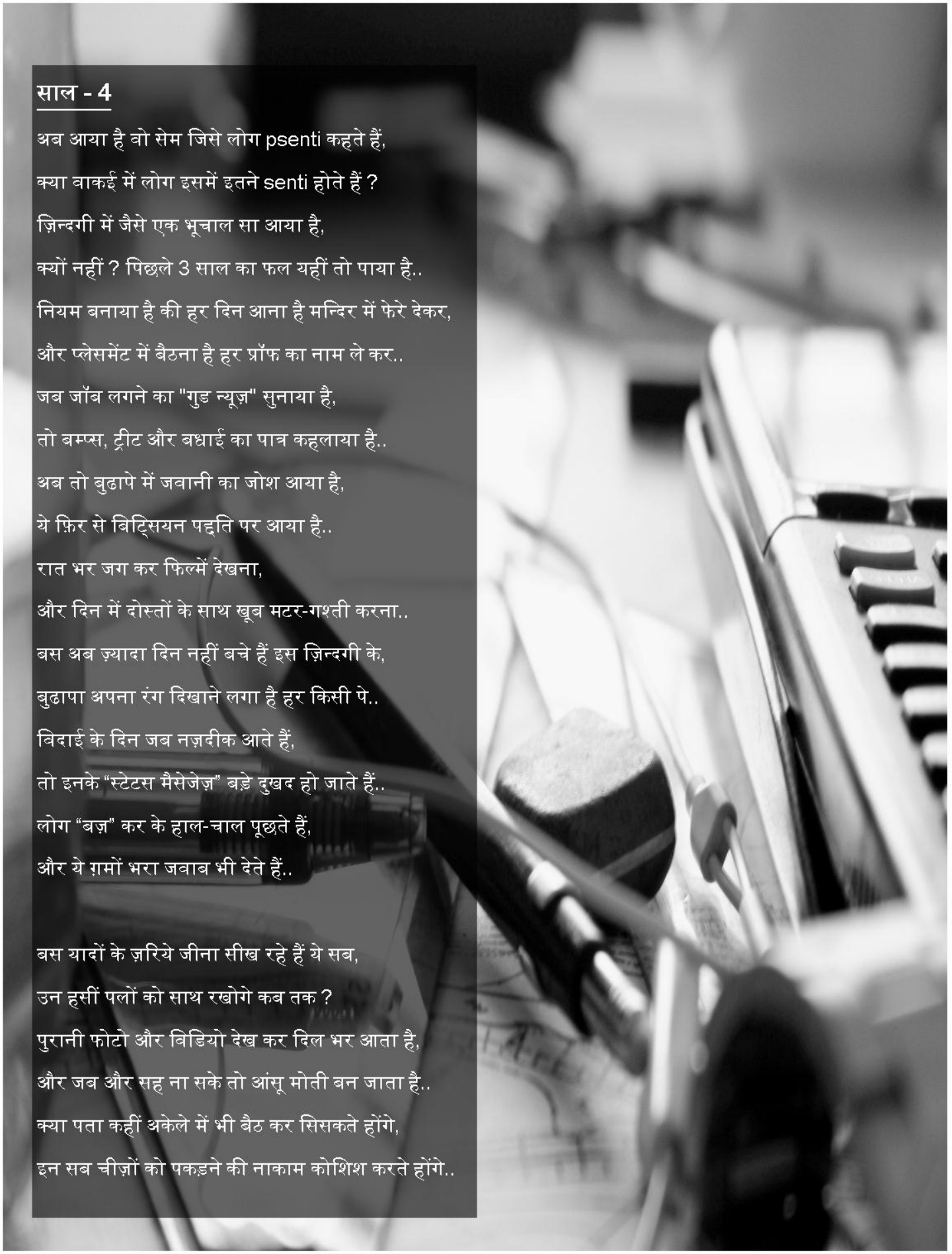

साल - 4

अब आया है वो सेम जिसे लोग psenti कहते हैं,
क्या वाकई में लोग इसमें इतने senti होते हैं ?
ज़िन्दगी में जैसे एक भूचाल सा आया है,
क्यों नहीं ? पिछले 3 साल का फल यहीं तो पाया है..
नियम बनाया है की हर दिन आना है मन्दिर में फेरे देकर,
और प्लेसमेंट में बैठना है हर प्रॉफ का नाम ले कर..
जब जॉब लगने का "गुड न्यूज़" सुनाया है,
तो बम्प्स, ट्रीट और बधाई का पात्र कहलाया है..
अब तो बुढापे में जवानी का जोश आया है,
ये फ़िर से बिट्सियन पद्दति पर आया है..
रात भर जग कर फिल्में देखना,
और दिन में दोस्तों के साथ खूब मटर-गश्ती करना..
बस अब ज़्यादा दिन नहीं बचे हैं इस ज़िन्दगी के,
बुढापा अपना रंग दिखाने लगा है हर किसी पे..
विदाई के दिन जब नज़दीक आते हैं,
तो इनके "स्टेटस मैसेजेज़" बड़े दुखद हो जाते हैं..
लोग "बज़" कर के हाल-चाल पूछते हैं,
और ये ग़मों भरा जवाब भी देते हैं..

बस यादों के ज़रिये जीना सीख रहे हैं ये सब,
उन हसीं पलों को साथ रखोगे कब तक ?
पुरानी फोटो और विडियो देख कर दिल भर आता है,
और जब और सह ना सके तो आंसू मोती बन जाता है..
क्या पता कहीं अकेले में भी बैठ कर सिसकते होंगे,
इन सब चीज़ों को पकड़ने की नाकाम कोशिश करते होंगे..